RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 27 जनवरी 2018

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका फरवरी 2018

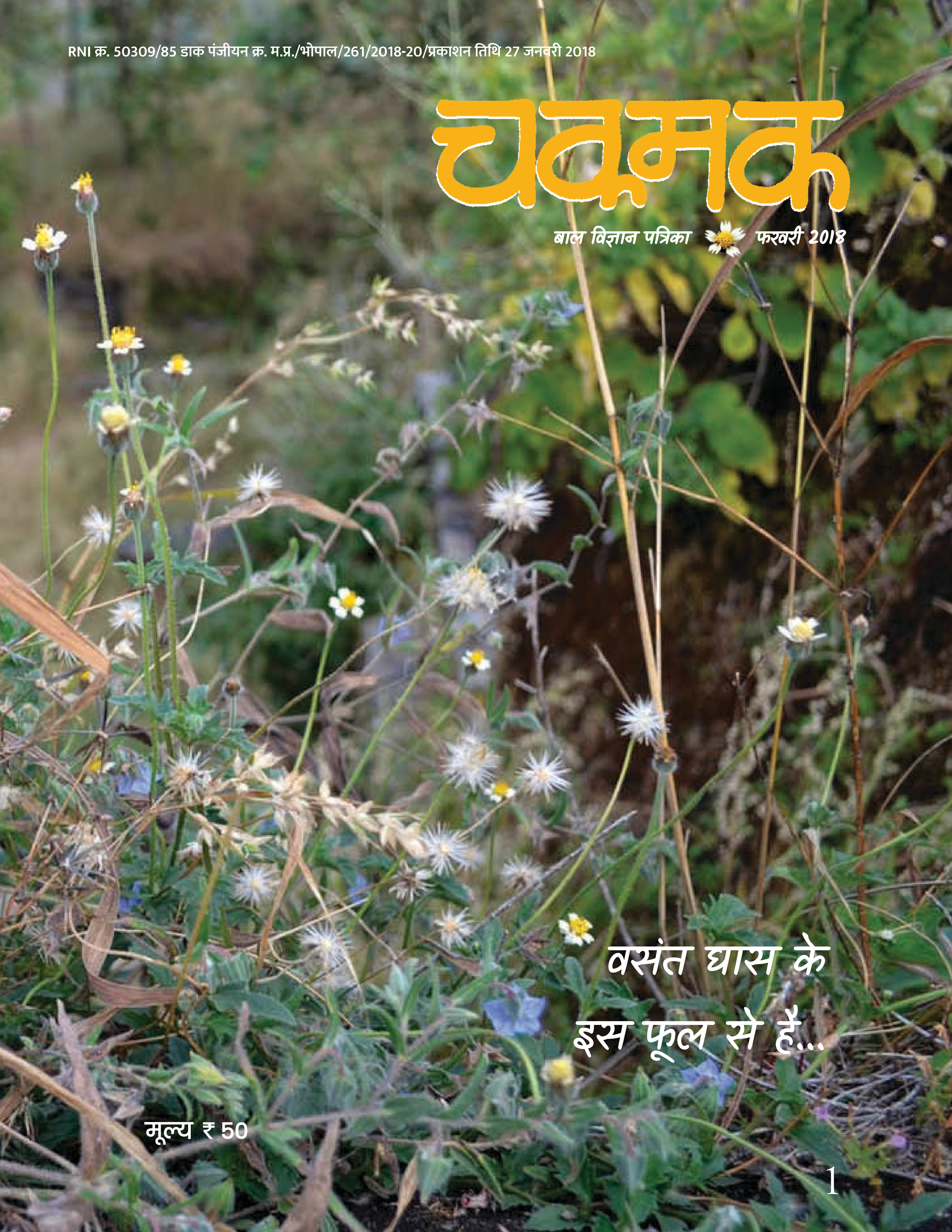

वसंत घास के इस फूल से है...

मूल्य ₹ 50

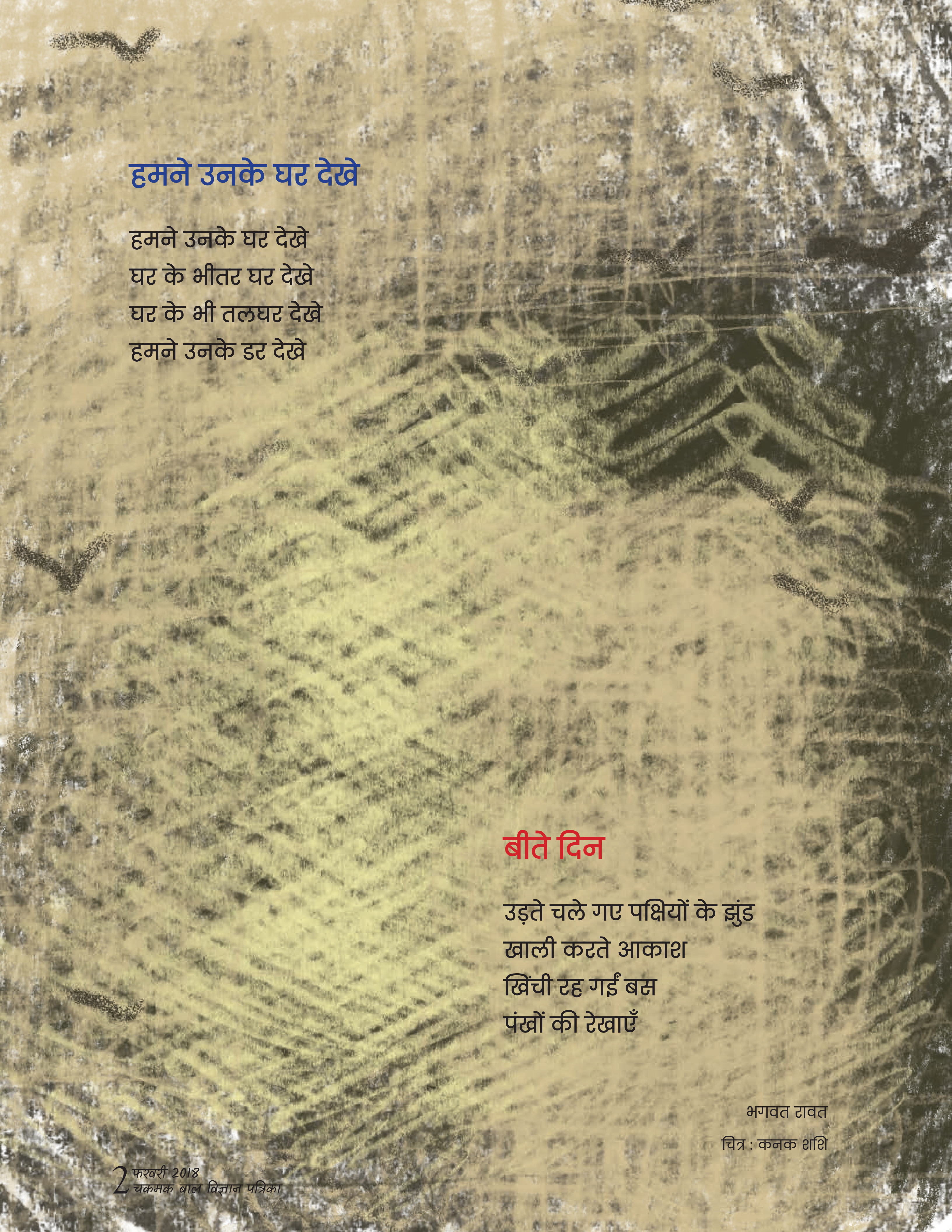

हमने उनके घर देखे

हमने उनके घर देखे
घर के भीतर घर देखे
घर के भी तलघर देखे
हमने उनके डर देखे

बीते दिन

उड़ते चले गए पक्षियों के झुंड
खाली करते आकाश
खिंची रह गईं बस
पंखों की रेखाएँ

भगवत रावत

चित्र : कनक शशि

अंक 377 फरवरी 2018

चकमक

इस बार

हमने उनके घर देखे व बीते दिन - भगवत रावत	2
सूरज और चाँद	3
राखीगढ़ी - भारती जगन्नाथन	4
गुफ्तगू - उमा सुधीर	7
खूबसूरती और सच - अज़ीज़ नेसिन	10
नीली चिड़िया - हरिवंशराय बच्चन	15
नेकलेस - शिवानी	16
मैं तस्वीर हूँ - तस्वीर	17
पारधी इतिहास - मुस्कान संस्था, भोपाल	20
मेरा पन्ना	22
नाचघर - प्रियम्वद	23
मेंढक और टूथपेस्ट - फ़्रांत्स होलर, निकोलाउस हाइडलबाख़	28
कूना के घर में पाला हुआ - विनोद कुमार शुक्ल	30
लहराती अकॉर्डियन किताबें - दीपाली शुक्ला	36
मेरा पन्ना	38
माथा पच्ची	42
चित्र पहेली	43
वसंत घास के इस फूल से है...	44

चित्र : शुभम लखेरा

सूरज और चाँद

एक दिन नसरुद्दीन एक सराय में घुसे और गंभीरता के साथ बोले, "सूरज से चाँद की उपयोगिता बहुत अधिक है।"

यह सुनकर सभी अचरज में पड़ गए। किसी ने पूछा, "लेकिन क्यों?"

नसरुद्दीन ने कहा, "चाँद रात में रोशनी देता है, दिन में रोशनी की ज़रूरत ही क्या है?"

आवरण चित्र - ट्राइडैक्स प्रोक्युम्बैन्स या धमन घाँस के नाम से जाना जाने वाला यह पौधा असल में घाँस नहीं है। खेतों और खाली ज़मीनों में मिलने वाले इस पौधे का उपयोग देसी इलाज में घावों से खून के बहाव को रोकने के लिए किया जाता है।

विशेष सहयोग - इकतारा बाल साहित्य केन्द्र

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

सहायक सम्पादक
सी एन सुब्रह्मण्यम्
कविता तिवारी
सजिता नायर
भवानी शंकर
रुद्राशीष चक्रवर्ती

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव
ब्रजेश सिंह

एक प्रति : 50.00
वार्षिक : 500.00
तीन साल : 1350.00
आजीवन : 6000.00
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण-
बैंक का नाम व पता - **स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल**
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017 फैक्स: (0755) 2551108 email - chakmak@eklavya.in, email - circulation@eklavya.in, www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

राखीगढ़ी

भारती जगन्नाथन

फोटो : विनायक

"चलो उस टीले पर चढ़ते हैं," दीपक चिल्लाया। सब बच्चे उस तरफ मुड़े और एक साथ बोले, "हाँ चलो।"

"नहीं, नहीं। वो बहुत ऊँचा है। रहने दो।" संध्या आंटी ने घोषणा की। प्रेम अंकल को भी चढ़ना अच्छा नहीं लगता था, वह बोले, "हाँ पूरे टीले पर सिर्फ कँटीली झाड़ियाँ हैं। खरोंच लगेगी।"

गोलू बोला, "लेकिन बहुत मज़ा आएगा।" संध्या आंटी बोलीं "अरे वहाँ ऊपर कुछ नहीं है। कुछ भी नहीं!"

"प्लीज़ आंटी प्लीज़। हमें जाने दो," गोलू ने गुज़ारिश की। पर बाकी सब रुके नहीं। दौड़ लगाने लगे कि कौन पहले ऊपर पहुँचता है।

वैसे टीला उतना ऊँचा भी नहीं था। फिर भी ऊपर पहुँचते-पहुँचते सब की साँसे तो फूल गई थीं। अब दौड़ लगाओगे तो साँस तो फूलेगी ही। समीरा भी एक बार फिसलकर गिरी थी, लेकिन चोट नहीं आयी। "देखो मुझे क्या मिला!" उसके हाथ में एक मिट्टी से बनी किसी जानवर की छोटी सी मूर्ति थी। "यह कोई पुराने ज़माने का खिलौना लगता है," समीरा बोली। दीपक ने बोला, "शायद सूअर है।" "नहीं कुत्ता है।" "न-न ये बैल है।" उनके बीच बहस चलती रही। इतने में दीपक

यह कौन सा जानवर था?
क्या यह एक खिलौना था?

मनके

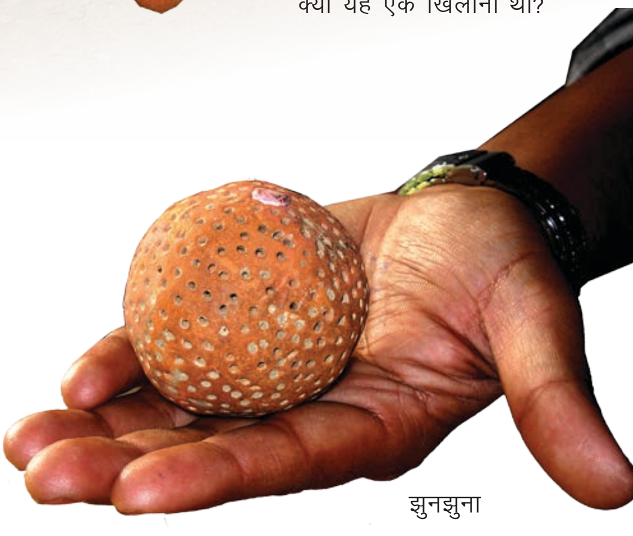

झुनझुना

को मिट्टी की एक छोटी सी मूर्ति मिली- एक महिला की मूर्ति पर उसके बाल अजीब तरीके से बंधे थे। “अरे ऐसी ही मूर्ति का चित्र हमारे इतिहास की पुस्तक में भी है - हड़प्पा सभ्यता की मूर्ति तो नहीं है यह!” टीले के ऊपर पहुँचने से पहले उन्हें कई सारे मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े और कुछ मनके भी मिले।

ऊपर पहुँचे तो देखा कि दूसरी तरफ खड़ी ढाल थी। मिट्टी की दीवार-सी थी, जिस पर जगह-जगह छेद थे। उन छेदों में तोते झाँक रहे थे। कबूतर और अन्य पक्षी लगातार उड़ रहे थे “ध्यान से,” रेशमी गोलू को पीछे खींचते हुए बोली। वह तोतों को देखने के लिए किनारे की तरफ झाँक रहा था।

नीचे की ओर सड़क एक लंबी स्लेटी रिबन की तरह दिख रही थी। आगे गेहूँ व सरसों के हरे और पीले खेत थे। दूसरी तरफ गाँव में सटे-सटे घर थे, जिनके बीच अजीबो गरीब गलियाँ ऊपर-नीचे जा रही थीं।

जब चारों नीचे लौटे तो संध्या आंटी बोलीं, “खुश! मैं तो कह रही थी, वहाँ कुछ भी नहीं है। कुछ भी!”

एक खिलौना बैल
जिसकी मुंडी
हिलती है

राखीगढ़ी टीला

बरतन के टुकड़े

टीले पर खुदाई...

राखीगढ़ी के टीले

अक्सर हमारे गाँवों के पास मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे टीले दिखते हैं और हम टीलों पर खेलते और गाय चराते हैं। कभी-कभी उन पर हमें कुछ पुरानी चीज़ें भी मिल जाती हैं। ऐसे ही टीले राखीगढ़ी गाँव में भी हैं। उनमें जो चीज़ें मिलीं, उनके कारण हमें अपने इतिहास की किताबों को ही बदलना पड़ा।

राखीगढ़ी दिल्ली से लगभग 150 किलोमीटर दूर हरियाणा राज्य का एक गाँव है। इसमें कई ऊँचे टीले हैं, जिनमें बहुत पुरानी बस्तियों के अवशेष हैं। जैसे ईंट, घर, मिट्टी के बर्तन के टुकड़े, तांबे की चीज़ें, तरह-तरह के मनके आदि। खोजबीन से पता चला है कि ये अवशेष आज से चार-पाँच हज़ार साल पुराने हैं और सिंधुघाटी सभ्यता (जिसे हड़प्पा संस्कृति भी कहते हैं) से जुड़े हैं। लगता है कि राखीगढ़ी उस सभ्यता की सबसे बड़ी बस्तियों में से थी। वहाँ आस-पास खेती तो होती ही थी, साथ ही, उन दिनों वहाँ कारीगरी और व्यापार भी बहुत विकसित था। दूर-दराज़ से कच्चा माल (पत्थर, तांबा, समुद्री शंख आदि) लाकर वहाँ सुन्दर मनके, तांबे की चीज़ें और कंगन बनाए जाते थे। मिट्टी के बर्तन और खिलौनों की तो पूछो ही मत।

ज़मीन पर लेटकर बारीकी से खुदाई करते पुरातत्व विभाग के लोग

गुप्त गू

उमा सुधीर

कुछ दिन पहले मैं एक प्रदर्शनी में गई थी। वहाँ एक स्टाल पर गोबर से बनी कुछ खूबसूरत नुमाईश की चीज़ें बेची जा रहीं थीं। उस प्रदर्शनी में मेरे साथ एक दोस्त की बेटी भी थी। उसे यह बिल्कुल नहीं भाया और घिनौना लगा। उसकी प्रतिक्रिया अन्य 'सभ्य' लोगों जैसी ही थी, जिनके लिए मल (विष्ठा) के बारे में किसी प्रकार की बात करना वर्जित है। उसका रामबाण तर्क था, "अगर कल को आपकी टट्टी से कोई ऐसी चीज़ बनाकर रख दे तो आपको कैसे लगेगा?"

तो मैं यहाँ इस वर्जना को तोड़कर टट्टी के बारे बात करने जा रही हूँ! साथ में कई तरह के भोजन का उल्लेख भी करूँगी, जिसे हम और अन्य जानवर खाते हैं और जिससे कई तरह की टट्टियां बनती हैं। मैं यह साफ कर दूँ - प्रदर्शनी में रखी गई वस्तुओं को बनाने में उपयोग किए गए गोबर को बाकायदा साफ किया गया था ताकि उस पर कोई मिट्टी या घास चिपकी न रह जाए। उसे अच्छी तरह सुखाकर गरम किया गया था और इस तरह तैयार किया गया था कि वह पानी सोखकर पिलपिला न बने। जब तक कि आपको कोई यह नहीं बताता कि इन सजावट की चीज़ों को गोबर से बनाया गया है तब तक आप को ज़रा-सा भी शक नहीं होता कि ये सुन्दर तोरण, पेन स्टैण्ड, डिब्बे वगैरह के स्रोत निषिद्ध मल हैं।

जो भी हो इस विषय पर मैं क्यों लिख रही हूँ? क्योंकि इससे हम न जाने कितनी बातें सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए किसी जानवर का मल (विष्ठा) बदबूदार होगा कि नहीं यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह मांसाहारी है या शाकाहारी। अगर कोई जानवर शेर या कुत्ते जैसा मांसाहारी है तो वह बहुत सारा प्रोटीन खाता होगा (मांस मूलतः प्रोटीन ही होता है)। प्रोटीन में गंधक या सल्फर की मात्रा अधिक होती है। गंधक के यौगिक या तो खुद बहुत बदबूदार होते हैं या जल्दी ही बदबूदर चीज़ों में विघटित हो जाते हैं। प्याज़ और लहसुन में भी महक अधिक इसलिए होती है क्योंकि इनमें सल्फर के यौगिक होते हैं। हालांकि गंध का संबंध केवल इन्हीं चीजों से नहीं है, इसके और भी कई कारण हैं। अब आप इस आधार पर खुद समझ सकते हैं कि बिल्ली का गू....

और फिर मल (विष्ठा) के विश्लेषण से हम यह बता सकते हैं कि वह जानवर क्या खाता रहा होगा। चाहे मल सूखा हो या जीवाश्म बन चुका हो (मल के फासिल या जीवाश्म को विष्ठाश्म कहते हैं)। वैज्ञानिक लुप्त जानवरों के भोजन के बारे में बहुत कुछ उनके विष्ठाश्म के अध्ययन से बता सकते हैं। जंगलों में बिखरी विष्ठा

डायनासोर का विष्ठाश्म

के अध्ययन से हम जंगली जानवरों के बारे में काफी कुछ पता कर सकते हैं। उनकी आबादी, स्वास्थ्य जैसी बातों को। दरअसल अनुभवी लोग यह बता सकते हैं कि आपके पांव के नीचे दबी पिलपिली चीज़ के लिए कौन सा जानवर ज़िम्मेदार है। जंगल में विष्ठा की मदद से जानवरों की गिनती भी की जा सकती है।

वैसे हम अपने ही मल से अपने स्वास्थ के बारे में क्या कुछ जान सकते हैं? आप शायद नहीं जानते हों मगर पुराने समय में किसी मरीज़ के मल की जाँच उसके अन्दरूनी अंगों की बीमारी के बारे में जानने का एक माध्यम था। एक सामान्य अवलोकन हम खुद कर सकते हैं। अगर हम आधुनिक संडास का उपयोग करते हैं तो हम देख सकते हैं कि मल पानी में तैरता

है कि डूबता है। स्वस्थ्य मल डूबता है। अगर वह तैरता है फिर इसका मतलब यह है कि आपने बहुत ज़्यादा खाया है या आपके शरीर भोजन ने में मौजूद सभी वसा को अंगीकार नहीं किया है या फिर आपके लीवर में कुछ गड़बड़ी है, जिसके कारण वसा पच नहीं रही है। इस संदर्भ में कुछ चिकित्सकों का मत है कि ज़्यादा गैस के कारण भी मल हल्का होकर तैरने लगता है। अब इसका यह बिलकुल मतलब नहीं है कि अगर आपका मल डूब जाता है तो आप एकदम स्वस्थ हैं। आपके अन्य अंगों में कुछ समस्या हो सकती है। यानि जो डूबा सो पार।

जो जानवर कम पानी से गुज़ारा करते हैं, उनकी विष्ठा ज़्यादा सूखी होती है। जहाँ गाय के गोबर को कंडे के रूप में जलाने के लिए सुखाना पड़ता है वहीं ऊंट की विष्ठा को सीधे ही जला सकते हैं। क्योंकि वह ज़्यादा सूखा होता है।

एक और दिलचस्प बात है कि जो जानवर किसी बिल, मांद या घोंसले में लोटते रहते हैं वे उन जगहों को साफ रखना पसंद करते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि वह जगह मैली न हो और वे बाहर जाकर शौच करते हैं। मांद साफ रहे इसलिए मादा अपने बच्चों की विष्ठा को मांद से बाहर भी ले जाती है। दूसरी ओर बंदर और गोरिल्ले जैसे जानवर जो लगातार नई जगह जाते रहते हैं, ज़्यादा परवाह नहीं करते हैं। अकसर उन्हें उनके सोने की जगह ही शौच करते देखा गया, आखिर वे वहाँ कल नहीं सोयेंगे!

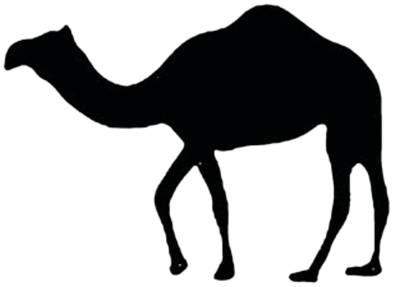

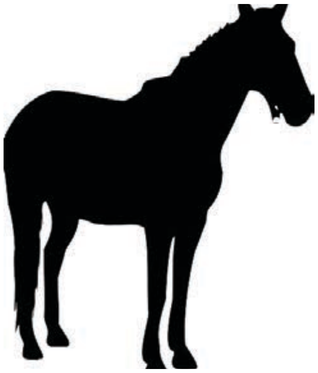

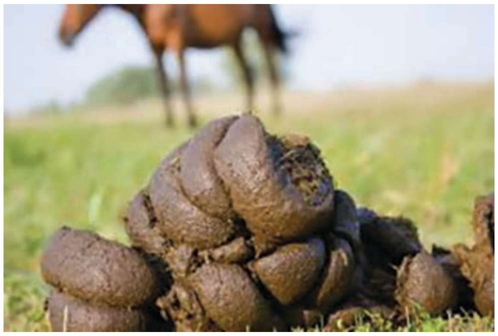

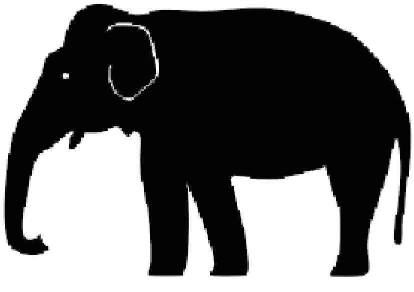

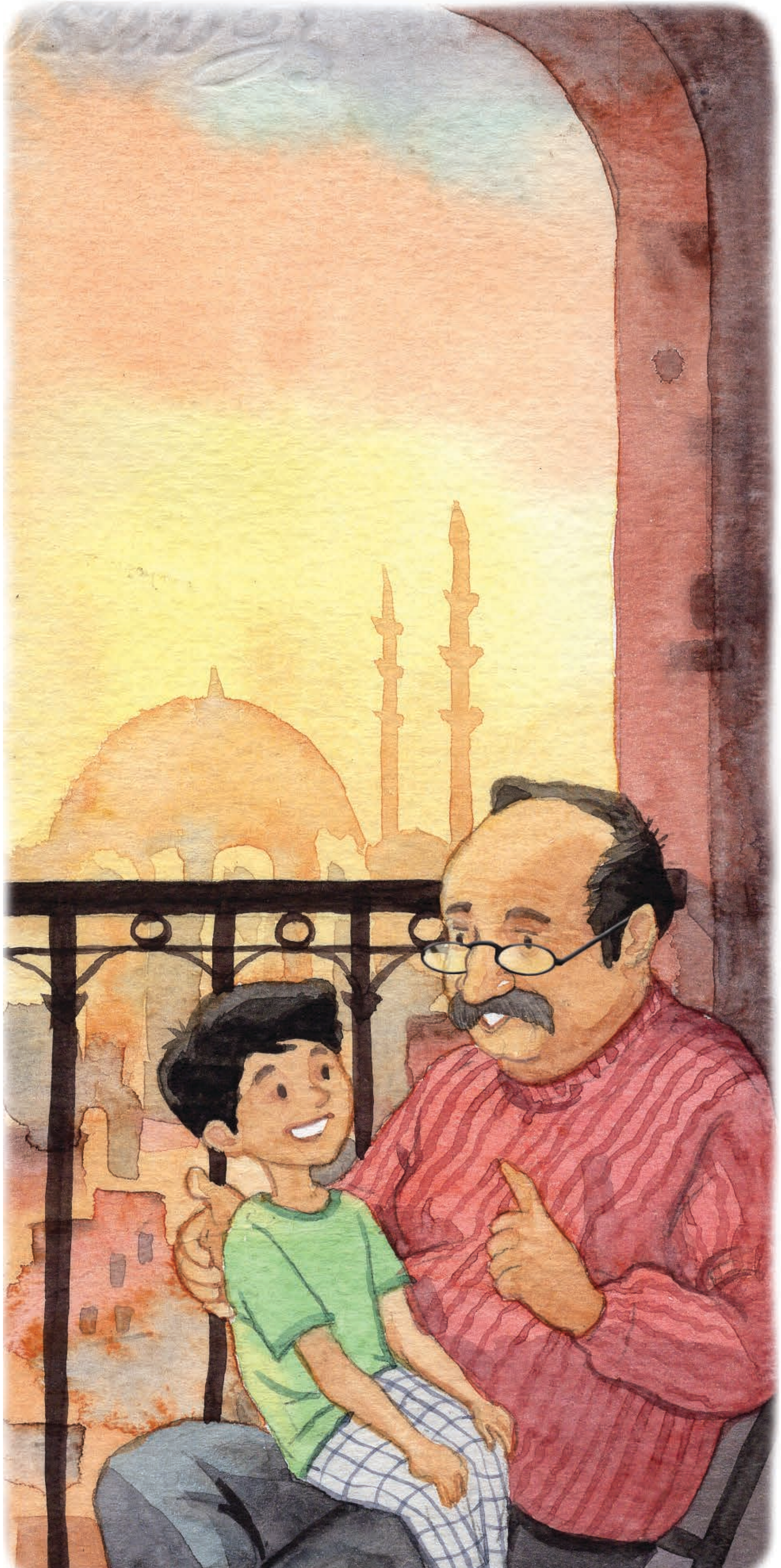

ख़ूबसूरती और सच

अज़ीज़ नेसिन

संक्षिप्त अनुवाद : सजिता नायर

मुरात को घरवालों से पता चला था कि उसके नाना कविता लिखते थे, लेकिन कविता क्या होती है, यह उसे नहीं पता था।

बसंत की एक सुबह नाश्ते के बाद, मुरात नाना के साथ बालकनी में बैठा था। नाना अखबार पढ़ रहे थे।

मुरात ने पूछा, “नाना, क्या आप कविता लिखते हैं?”

उसके नाना ने अखबार से अपनी निगाहें उठाकर उसकी तरफ़ देखा।

उन्होंने कहा, “हाँ, मैं कभी-कभार कविता लिखता हूँ...”

मुरात जिज्ञासु था। आखिर क्या चीज़ थी कविता? उसकी अम्मी और अब्बू तो कविता नहीं लिखते थे पर उसके नाना लिखते थे। इसका मतलब सब लोग कविता नहीं लिखते। सब कविता क्यों नहीं लिखते? शायद उन्हें कविता लिखना नहीं आता! स्कूल जाना शुरू करने और लिखना-पढ़ना सीखने के बाद, क्या वह कविता लिखेगा? ऐसे कई सवालों से मुरात का सर भर गया था।

वह अपनी जिज्ञासा को काबू नहीं कर पा रहा था।

उसने पूछा, “नाना, ये कविता क्या है?”

उसके नाना फिर से अखबार से अपनी निगाहें उठाकर, चश्मे के ऊपर से अपने नाती की ओर देखे और मुस्कुराए।

उन्होंने कहा, “यह समझाना तो मुश्किल है..”

मुरात ने बहुत विश्वास के साथ कहा, “आप मुझे बताइए, मैं समझ जाऊँगा...”

नाना ने कहा, “बेशक तुम समझ जाओगे पर मेरे लिए समझाना मुश्किल है...”

हमेशा की तरह, मुरात ने फिर एक के बाद एक सवाल पूछने चालू कर दिए, “क्यों मुश्किल है?”

“क्योंकि कविता को लेकर सबकी अपनी-अपनी समझ है। इसीलिए...”

उसने कहा, “ऐसा है तो आप क्या समझते हैं, वो बताइए...।”

मुरात के सवालों से बचा नहीं जा सकता था। नाना ने उसे अपनी गोद में बिठाया और कहा, “मेरे लिए कविता का मतलब किसी सच्चाई को ख़ूबसूरत भावनाओं के रूप में कहना है।”

मुरात को कुछ समझ में नहीं आया। उसको यह सोचकर बुरा लगा कि उसे कुछ समझ नहीं आया और वह आगे अपने नाना से बिना कोई सवाल पूछे शांत रहा।

कुछ समय बाद रात के समय मुरात बालकनी में दुबारा अपने नाना के साथ बैठा था।

नाना ने कहा, “अँधेरा हो रहा है, रात हो चुकी है। चलो अंदर चलते हैं...।”

कुछ देर से मुरात इस सोच में था कि ‘दिन और रात क्या होती है, दिन में उजाला और रात में अँधेरा क्यों होता है?’ उसने इस मौके का फायदा उठाकर पूछा, “नाना, रात को अँधेरा क्यों होता है? अँधेरा आता कहाँ से है और ऐसा क्यों कि दिन में उजाला होता है?”

नाना ने कहा, “मैं बताता हूँ।”

कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने कहा, “मैं जो बोलूँगा उसमें से अगर तुम्हें कुछ समझ में न आए, तो ज़रूर पूछ लेना...”

मुरात ने कहा, “ठीक है...।”

नाना ने बताना शुरू किया, “आसमान में एक ख़ूबसूरत लड़का और लड़की हैं। लड़की इतनी ख़ूबसूरत है कि यकीनन वह दुनिया की सबसे सुंदर लड़की है...। उस रूपवान लड़के की आँखें कोयले जैसी काली हैं और उसके बाल चमकते काले रंग के हैं। और तो और उसका चेहरा काले रेशम के नक़ाब से ढँका हुआ है। उसके कपड़े काले मखमल के हैं। पैरों में उसने बेदाग़ काले चमड़े के जूते पहने और हाथ में काले रंग के दस्ताने पहने हुए हैं। उस नौजवान की पीठ पर एक चौड़ा लबादा है, वह लबादा भी काले मखमल का है।

मुरात ने पूछा, “यह ख़ूबसूरत लड़का काले कपड़े ही क्यों पहना हुआ है, नाना?”

नाना ने कहा, “क्योंकि वो उस सुंदर लड़की से प्यार करता है। वह हमेशा उसके पीछे लगा रहता है। वह बिना दिखे उस तक पहुंचना चाहता है। गहरे काले कपड़े पहने हुए वह छिपकर उसका पीछा कर रहा है। उसका कपड़ा, लबादा और नक़ाब- सबकुछ मखमल, रेशम और साटन के हैं... उसके दस्ताने कोमल चमड़े के हैं। उसके लबादे के सिरे इतने चौड़े हैं कि पृथ्वी का आधा भाग ढँक लेते हैं। यह ख़ूबसूरत लड़का सुंदर लड़की का पीछा करता और वह जहाँ-जहाँ जाता, उसका लबादा वहाँ फैल जाता। रात भी उसके साथ जाती। इस तरह से पृथ्वी का एक भाग अँधेरे में रहता।

“लड़के के कपड़े तो काले हैं, लेकिन उनमें सोने के बटन लगे हैं। उसने छाती पर चाँदी और सोने के ज़ेवर पहने हैं। उसके लबादे के सिरे पर चमकदार सुनहरे मोती टके हुए हैं। उसने कमर में चाँदी और सोना जड़ा हुआ बेल्ट पहना है। बेल्ट के बीच में हीरा जड़ा हुआ है। उसके बूट में मोती जड़े हुए हैं।

“जो तारे हम रात में देखते हैं, तारामंडल, आकाशगंगा- ये सभी आभूषण हैं, सजावट हैं, सोना, हीरे, चमकने वाली वो हर चीज़ जो उसने पहनी है... यह नौजवान ख़ूबसूरत लड़की के पीछे जहाँ-जहाँ जाता, अँधेरा भी उसके साथ चलता। इसी तरह रात उसके साथ-साथ हमारी गोल धरती का चक्कर काटती है।

मुरात ने उत्साह के साथ पूछा, “तो फिर सुबह कैसे होती है, नाना?”

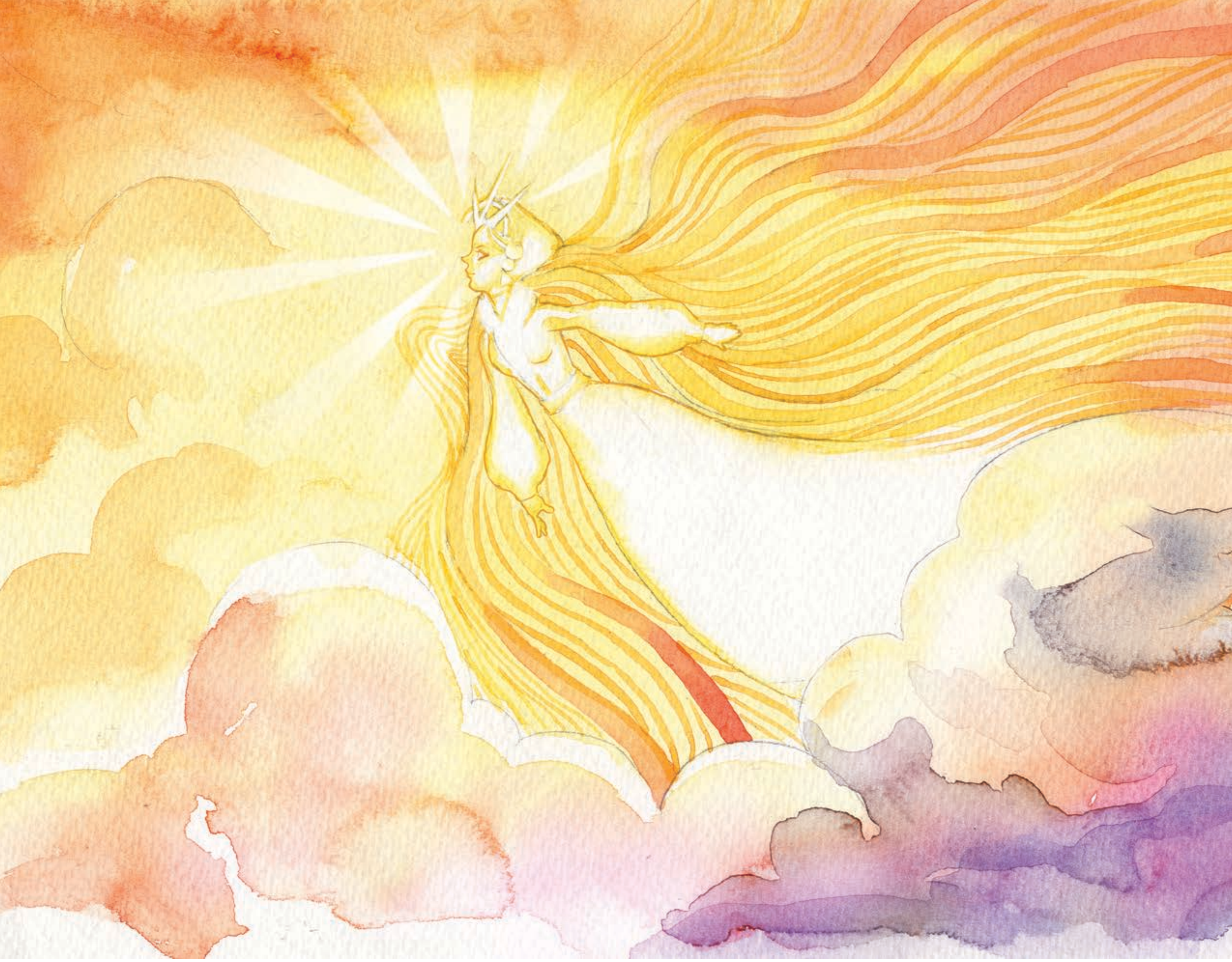

उसके नाना ने सुबह की कहानी कुछ ऐसे सुनाई, “यह लड़की जिसे नौजवान पकड़ने की कोशिश कर रहा है.. वह कैसी दिखती है? वह बहुत ख़ूबसूरत है, इतनी सुंदर है कि उससे ज़्यादा सुंदर लड़की शायद ही दुनिया में हो। जिसने उसकी खूबसूरती को देखा है वह बस देखता ही रह गया। उसके बाल सुनहरे रंग के और रेशम की तरह मुलायम। उसने सफ़ेद रंग की रेशम की साड़ी पहनी हुई है। उसका लम्बा लबादा सफेद साटन का बना है। उसकी गरदन पर कढ़ाई की हुई सफेद पट्टे का स्कार्फ है। एक सफ़ेद महीन जाली का बेल्ट उसकी कमर पर बंधा है। उसके जूते सफेद मखमल के हैं... उसके हाथ में चमड़े के सफेद दस्ताने और सफेद रेशम का रूमाल है। वह बेदाग़ सफेद फूलों से ढंकी हुई है। कभी तो वह फूलों का यह ताज पहने रहती, कभी उतार देती। जब वह ताज निकालती तब उसके सुनहरे बालों में लगा छोटा ताज दिखाई देता, वाह क्या ताज है वो। उसके ताज में लगे कीमती पत्थर इतने चमकीले और तेज़ रोशनी वाले हैं कि उसकी तरफ कोई नहीं देख सकता है। पूरे सफेद कपड़ों वाली इस ख़ूबसूरत लड़की का लबादा इतना बड़ा है कि पृथ्वी का आधा हिस्सा ढँक देता है। जब काले लड़के का लबादा पृथ्वी का एक भाग ढँकता है तो वहाँ अँधेरा हो जाता है और रात का समय हो जाता है। वहीं लड़की के सफेद कपड़ों से ढँका पृथ्वी का दूसरा भाग रोशनी में रहता है और वहाँ दिन का समय होता है।

“नौजवान पीछे भागता और लड़की उससे दूर भागती। रात पीछे और दिन आगे। इसी तरह वे एक-दूसरे का

पीछा करते हुए पृथ्वी के चक्कर लगाते। जैसे-जैसे वे भागते पृथ्वी में एक तरफ रात और दूसरी तरफ दिन हो जाता है।"

मुरात ने कहा, "पर नाना, रात हमेशा तो गहरी काली नहीं होती...।"

"हाँ! तुम सही कह रहे हो।" नाना ने कहा, "कुछ रातें नीली होती है। जैसे तुम कपड़े गन्दे होने पर उन्हें धोने के लिए निकालकर दूसरा कपड़ा पहन लेते हो। उसी तरह आसमान में जो यह नौजवान है वह भी अपने काले कपड़ों के गन्दे होने पर उन्हें धोने के लिए डालता और उसकी जगह नीले कपड़े पहन लेता। जब वह कपड़े बदल देता तब आसमान भी नीला हो जाता है। कभी-कभार आसमान और हमारे आसपास का सब कुछ गुलाबी या लाल रंग का हो जाता है। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जैसे ही यह नौजवान लड़का, लड़की के बहुत करीब आ जाता है तब वह लड़की शरमा जाती, उसके गाल लाल और गुलाबी हो जाते हैं। उसके गालों का रंग आसमान में और हमारे आसपास झलकता है। फिर जब नौजवान उसके हाथों को छूता है तो वह गहरे लाल रंग की हो जाती है और इसलिए आसमान भी गहरे लाल रंग का हो जाता है।"

"कभी-कभार दिन के समय में भी आसमान लाल रंग का हो जाता है। उस समय लड़की परेशान होती है। जब उसका चेहरा चिन्ता से ग्रसित होता है तब आसमान के बादल काले हो जाते हैं।

"अब समझे दिन और रात क्या होता है?"

मुरात ने कहा, “हाँ, समझा...”

उसके नाना ने कहा, “जो मैंने तुम्हें अभी सुनाया वह दिन और रात की कहानी है..”

मुरात को दिन और रात की कहानी बहुत पसंद आई। उस दिन के बाद से उसे जब भी मौका मिलता, वह अपने नाना को दुबारा से यही कहानी सुनाने को बोलता। उसने अब तक इस कहानी को इतनी बार सुन लिया था कि उसे कहानी याद हो चुकी थी। कभी-कभी तो वह खुद ही अपने नाना को दिन और रात की कहानी सुनाता।

एक दिन स्कूल में टीचर ने समझाया कि दिन और रात किस वजह से होते हैं, क्यों दिन का रंग हल्का और रात का रंग गहरा है। पृथ्वी लगातार सूरज के चक्कर लगाती है। जैसे ही पृथ्वी घूमती, जिस जगह सूरज की रोशनी पड़ती, वहाँ दिन हो जाता। पृथ्वी का वह भाग जहाँ सूरज की रोशनी नहीं पड़ती, वहाँ अँधेरा रहता इसलिए वहाँ रात हो जाती। इसी तरह पृथ्वी पर हर जगह बारी-बारी से रात और दिन होते हैं। दिन और रात होने के इस सिलसिले का कारण पृथ्वी का घूमना है।

मुरात अपनी टीचर को आश्चर्यचकित होकर सुन रहा था। उसकी टीचर ने दिन और रात होने का जो कारण बताया था वो उसके नाना की बताई कहानी से बिलकुल अलग था। उसके नाना ने जो कहानी सुनाई थी वह टीचर के बताए हुए कारण से ज़्यादा ख़ूबसूरत थी।

टीचर ने मुरात की आँखों में असमंजस देखा।

उन्होंने पूरी कक्षा से पूछा, “क्या आप सबको समझ आया?”

सबने कहा, “हाँ...”

मुरात शांत था।

टीचर ने पूछा, “क्या तुम्हें समझ नहीं आया, मुरात?”

मुरात थोड़ा हिचकिचाया। उसने कहा, “मुझे समझ तो आया पर मेरे नाना ने मुझे दिन और रात अलग तरह से समझाया था।”

टीचर ने कहा, “तुम्हारे नाना ने तुम्हें कैसे समझाया? क्यों न तुम यहाँ सामने आकर हम सबको भी बताओ...”

मुरात उठा और बोर्ड के पास गया। उसने अपने दोस्तों को वही दिन और रात की कहानी सुनाई जो उसने अपने नाना से सुनी थी। वही कहानी जो उसने खुद बहुत बार सुनाई थी। उसके कहानी सुनाने का अंदाज़ इतना अच्छा और सही था कि उसके सभी दोस्त उसकी कहानी में खो गए। उस वक़्त कक्षा में एक सुई गिरने की आवाज़ भी सुनाई दे सकती थी।

टीचर ने मुरात से पूछा, “तुम्हें इन दोनों में से कौन सी बात पर ज़्यादा यकीन है?”

मुरात के लिए यह बड़ा ही मुश्किल सवाल था। उसकी टीचर हमेशा कहती थी, “उसी पर यकीन करो जो सच है, जो तुम्हें सच लगे!” इस वजह से मुरात ने कहा, “दोनों में से जो भी सच हो...”

टीचर ने दुबारा पूछा, “तुम्हारे हिसाब से दोनों में से कौन-सा सच है?”

कुछ देर सोचकर, मुरात ने कहा, “आपने जो बताया वो मुझे ज़्यादा सच लगा, लेकिन फिर भी...”

और वह रुक गया। तब टीचर ने कहा, “लेकिन?”

मुरात ने कहा, “मेरे नाना की बताई कहानी ख़ूबसूरत है। काश नाना की कहानी सच होती...”

तब मुरात की टीचर ने बताया कि उसके नाना ने जो दिन-रात की कहानी सुनाई और जो कक्षा में बताया गया है, उनमें ज़्यादा अंतर नहीं है। बस दोनों के बताने के तरीके में फ़र्क है। मुरात के नाना ने इस घटना को सुंदर शब्दों में बांधकर बहुत ख़ूबसूरती से एक परीकथा में बदल दिया। उन्होंने रात को काले कपड़े पहने हुए एक ख़ूबसूरत नौजवान बना दिया और दिन को सफेद कपड़े पहनी हुई एक सुंदर लड़की।

वहीं टीचर ने प्रकृति में जो होता है, उसको सीधे शब्दों में बयान कर दिया। स्कूल से घर आते से ही मुरात अपने नाना के कमरे में गया। उसने अपने नाना को, उसकी टीचर ने जो उसे असल में दिन और रात होने का कारण बताया था, वह बताया। उसने यह भी बताया कि उसकी टीचर ने कहा कि जो दिन और रात की कहानी उसके नाना ने उसे सुनाई और जो कारण टीचर ने बताया, उनमें फर्क नहीं है।

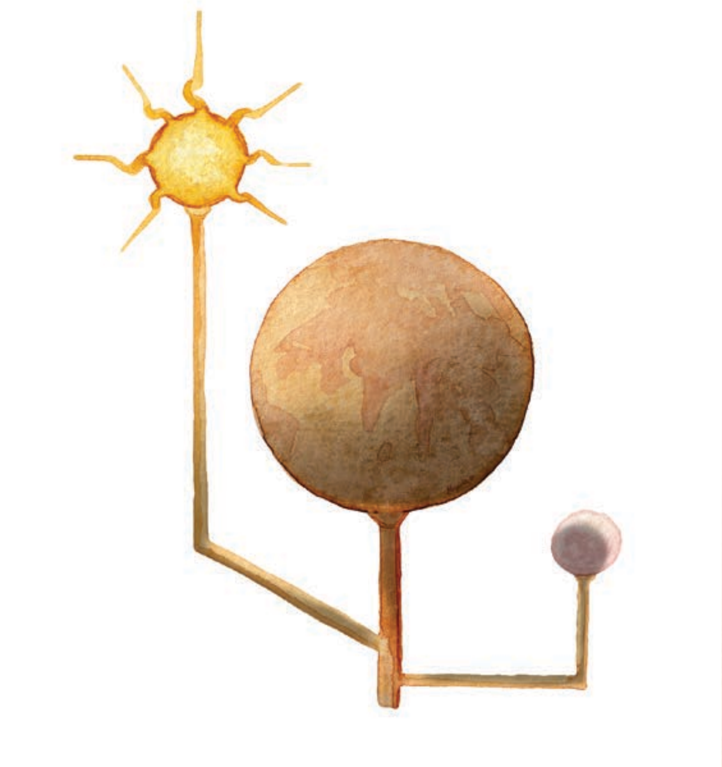

चित्र : मयूख घोष

“हाँ,” उसके नाना ने कहा, “तुम्हारी टीचर ने तुम्हें अलग तरीके से समझाया और मैंने अलग। पर जो बात हम कहना चाहते थे, वह एक ही है।”

कुछ देर रुककर नाना ने आगे बोला, “तुम्हें याद है जब तुम छोटे थे तब तुमने मुझसे पूछा था कि ‘कविता क्या होती है?’ और मैंने तुम्हें बताया था, ‘कविता यानी किसी सच्चाई को ख़ूबसूरत भावनाओं के रूप में कहना है।’”

हाँ, तीन साल हो चुके थे पर मुरात को अपने नाना के बताए शब्द अभी भी याद थे। वह अब वो सारे शब्द समझता था जो तब नहीं समझ पाया। कविता यानी किसी सच्चाई को ख़ूबसूरत भावनाओं के रूप में कहना है। उसके नाना ने उसकी टीचर की बताई हुई सच्ची बात को उसे ख़ूबसूरत भावनाओं के साथ परीकथा के रूप में बताया। उसके नाना एक कवि थे।

उस दिन के बाद से, मुरात भी कविता लिखने की कोशिश करने लगा। चकमक

नीली चिड़िया

नीले आसमान से उतरी
नीली एक निराली चिड़िया
गाती उड़नेवाली चिड़िया,
उड़ती गानेवाली चिड़िया।

इस फुनगी से उस फुनगी पर
उड़कर जानेवाली चिड़िया,
इन पत्तों में, उन पत्तों में
छिपकर गानेवाली चिड़िया।

पर फड़काकर नीचे आकर
दाना खानेवाली चिड़िया,
दाना खाकर पर फड़काकर
झट उड़ जानेवाली चिड़िया।

इस डाली से उस डाली पर
उड़-उड़ जानेवाली चिड़िया,
लाख बुलाऊँ लेकिन मेरे
पास न आनेवाली चिड़िया।

नीले आसमान से उतरी
नीली एक निराली चिड़िया
गाती उड़नेवाली चिड़िया
उड़ती गानेवाली चिड़िया

- हरिवंशराय बच्चन

चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

नेकलेस

शिवानी

स्कूल से आए सिर्फ दो ही, मिनट हुए थे कि घर के बाहर से आवाज़ आई, "शिवानी, ओ शिवानी!"

सामने मेरी दोस्त सारा खड़ी थी। वह बोली, "चल मेरे घर! चलकर, खेलते हैं!"

हम उसके घर जाने के लिए तैयार हो गए। वह चलते-चलते पूछ रही थी, "आज स्कूल में क्या पढ़ाया गया?" "कुछ नहीं, आज गणित की टीचर आई थी और जमा-घटा के सवाल करवाए।" मैंने उसे बताया।

हम सारा के घर पर पहुँच गए। हम सीधा उसकी छत पर चल दिये। सारा की छत ऊँची है। वहाँ खेलना बहुत अच्छा लगता है। हम वहाँ पर घर-घर खेलने लगे। छत पर एक पलंग पड़ा था। हमने उसे खोला और उसे थोड़ा तिरछा करके एक घर की तरह बना लिया। अब हमें धूप भी नहीं लग रही थी।

तभी मेरी नज़र बगल वाली छत पर गई। वहाँ पर कुछ चमक रहा था। वह एक चमकदार नेकलेस था। इतने में सारा की मम्मी ने आवाज़ दी, "सारा, नीचे आकर खाना खा ले!"

सारा मुझसे भी बोली, "शिवानी आ चल, नीचे चलकर खाना खाते हैं फिर आकर खेलेगें!"

"तू जा, मैं अभी आती हूँ!" मैंने उससे कहा।

वह जैसे ही नीचे गई, मैं पूरी छत पर अकेली हो गई। नेकलेस वाली छत पर कूदी और वह नेकलेस उठा लिया और चुपके से अपनी जेब में रख लिया।

मैं उस नेकलेस को जेब में रख ही रही थी कि सारा दौड़ती हुई आई। उसे देख मैं घबरा गई।

मुझे डर था कि कहीं उसे मालूम न हो जाए कि मेरी जेब में नेकलेस है। मैं जैसे ही नीचे उतरी तो मुझे महिमा दीदी ने रोक लिया, "शिवानी आज मेरा जन्मदिन है, शाम में आ जाइयो!"

"अच्छा दीदी, अभी तो मैं जाती हूँ, शाम को आ जाऊँगी!" मैं उन्हें देखते हुए बोली।

मैं दौड़ती हुई घर पहूँची और नेकलेस को जेब से निकाल कर गले से लगाकर देखने लगी। वह चमक रहा था और मुझ पर बहुत सुंदर लग रहा था। मैंने सोच लिया था मैं इसे किसी को नहीं दूँगी। किसी की शादी में जाना होगा तो इसे ही पहन कर जाऊँगी। उसे देख कर ऐसा लग रहा था कि किसी को वह पसंद नहीं आया होगा इसीलिए फेंक दिया होगा।

मैं शाम को साढ़े छः बजे ट्यूशन के लिए निकल गई। वहीं से महिमा दीदी के जन्मदिन की पार्टी में चली गई। वहाँ पर सभी महिमा दीदी को गिफ्ट दे रहे थे। मेरे पास में कुछ नहीं था। मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मैं बहुत देर तक सोचती रही। फिर, मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और उस नेकलेस को निकाला। उसे अपनी कॉपी से एक पेज फाड़कर उसमें पैक किया और स्केच पैन से "हैप्पी बर्थडे महिमा दीदी" लिखा और गिफ्ट बनाकर दीदी को दे दिया।

दीदी बहुत खुश हुई। पार्टी चलती रही। केक कटा, दीदी ने मुझे भी केक खिलाया।

आज बहुत अच्छा लगा।

शिवानी चौथी क्लास में पढ़ती हैं और एक साल से अंकुर लर्निंग कलेक्टिव की रियाज़कर्ता हैं।

मैं तस्वीर हूँ

तस्वीर

मैं तस्वीर हूँ। मैं भोपाल की एक पारधी बस्ती में रहता हूँ। बचपन में मेरे परिवार की मुझे पढ़ाने-लिखाने की बहुत इच्छा थी। मेरी भी किताबों में दिलचस्पी थी। स्कूल में दाखिला लेने से पहले ही पिताजी घर पर मुझे गणित, हिन्दी पढ़ाने लगे थे। मैं हिन्दी में शब्द जोड़कर पढ़ भी लिया करता था।

हम 15-16 पारधी बच्चों को स्कूल में एक साथ दाखिला मिला। पहली कक्षा में हम सब साथ में पढ़े, पर दूसरे साल से हमारी क्लास में दूसरे समुदायों के बच्चे भी पढ़ने लगे थे। अब हमारे साथ भेदभाव होने लगा। क्लास में ऊटपटाँग हरकतें होने लगीं। टीचर ने उन बच्चों और हमें अलग-अलग कमरों में बैठाना शुरू कर दिया। वे बच्चे हमसे दोस्ती नहीं करते थे और हमें 'कचरा उठाने वाला' बोलते थे। उन बच्चों की शिकायत पर सर हमारी ही पिटाई करते।

गणित के सर हम लोगों की बुरी तरह पिटाई करते। इससे हम स्कूल जाने से मुँह फेरने लगे। गणित के सर मुझे रोज़ाना पीटते क्योंकि मुझे पहाड़े याद नहीं हो पाते थे, पर मन मारकर स्कूल जाता रहा। स्कूल न जाने पर घर में भी पिटाई होती। घर में पिटाई - स्कूल में भी पिटाई! एक दिन हमारे एक दोस्त ने गुस्से में आकर एक स्कूल टीचर को डण्डे से मारा। पता नहीं क्यों उस दिन मैं बहुत खुश हुआ था। यह भी लगा कि काश उसने उस गणित टीचर को मारा होता!*

हमारी पढ़ाई मार के साथ चलती रही और हम तीसरी कक्षा में पहुँच गए। एक दिन क्लास में प्रिंसिपल आए और हमें एक कागज़ देकर बोले, "तुम्हें आगे पढ़ना हो तो अपना दाखिला अँग्रेज़ी मीडियम में करा लो। हम हिन्दी मीडियम में पढ़ाना बन्द कर रहे हैं।" इससे हम सभी पारधी बच्चे स्कूल से बाहर हो गए। हम किताबें देखते ही चिड़ जाते थे। हमें स्कूल के सर से नफरत-सी होने लगी थी।

कुछ बच्चे बस्ती में बने 'मुस्कान सेंटर' में जाते थे। इनमें एक मैं भी था। हमने उसी साल पाँचवीं कक्षा की तैयारी शुरू की थी। मैं पढ़ाई के साथ कचरा बीनने भी जाया करता था। मैं सुबह 5 बजे से 10 बजे तक कबाड़ बीनता फिर मुस्कान सेंटर में पढ़ने निकल पड़ता। शाम को घर लौटकर बोरा उठाकर दोबारा से बीनने निकल पड़ता।

एक दिन सुबह 5 बजे मैं अपने दो दोस्तों के साथ बस्ती से दो किलोमीटर दूर कचरा बीन रहा था। अचानक हमारे सामने पुलिस की गाड़ी आई और हमें रोक लिया। पुलिसवालों ने गाड़ी से उतरते ही हमारे साथ मार-पीट शुरू कर दी। हमें इतना मारा कि हमसे चलते भी नहीं बन पा रहा था। वो हमें जिस डण्डे से मार रहे थे उसमें कीलें निकली हुइ थीं। हमारे शरीर से खून निकलने लगा था। हम बार-बार बोल रहे थे कि हमने किसी का कोई समान नहीं चुराया है, पर न तो वहाँ जमा लोगों ने और न पुलिसवालों ने हमारी बात सुनी। हमारे बाल पकड़कर हमें पुलिस वैन में डालकर थाने ले गए। थाने में भी हमें बेल्ट से मारा।

*हम इस रचना में शिक्षक के साथ हुई मारपीट का समर्थन नहीं करते। जैसे हम तस्वीर के साथ हुए भेदभावों का भी समर्थन नहीं करते। इस रचना को जस का तस दे रहे हैं। ताकि हम तस्वीर सरीखे बच्चों के गुस्से को समझ सकें। गुस्से की जड़ समझ पाएँ।
सोचो, अगर तस्वीर तुम्हारे साथ पढ़ रहा होता तो तुम उसके पक्ष में क्या करते?

पुलिस और थाने के इस अनुभव को मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा। रात को 8 बजे माँ आई और 2000 रुपए पुलिस को देकर हमें छुड़ा ले गई।

पुलिस की परेशानी के साथ-साथ घर में खाने और पैसे की भी परेशानी थी। घर में एक बार खाना पकता था। कभी-कभी तो वो भी नहीं पकता। इसी के लिए माँ, मैं और छोटा भाई दिन-दिनभर कबाड़ चुनते। बचपन से पैसे जमा करने की होड़-सी लगी रहती, फिर भी ज़रूरत की चीज़ें नहीं खरीद पाते। घर में आए दिन मम्मी-पापा का पैसे को लेकर झगड़ा होता। पर अगले दिन सब फिर से अपने काम में जुट जाते। घर में रोज़-रोज़ की लड़ाई के कारण हमारा परिवार दो हिस्सों में बँट गया। हम चार बहन-भाई छह महीने तक अलग-अलग एक-दूसरे की शक्ल देखे बिना रहे। दुख होता था कि पापा हमसे गुस्सा होकर चले गए। मैंने दोनों को एक करने की बहुत कोशिश की पर उस समय कामयाब नहीं हुआ। उन दिनों मेरी पाँचवीं कक्षा की तैयारी चल रही थी। एक-दो महीने के बाद पापा का गुस्सा ठंडा हो गया और वो फिर से हमारे साथ रहने लगे।

एक दिन हमारी बस्ती में अचानक रात एक बजे के करीब पुलिस ने छापा मारा। पुलिस दरवाज़े पर लठ मारने लगी। हम घबरा गए। उस समय मेरी माँ छोटे चाचा के साथ कबाड़ बीनने राजस्थान गई थी। यहाँ पर मैं और पिताजी थे। मेरे पापा की टाँग टूटी हुई थी। पापा से चलना नहीं बनता था। पुलिसवाले ने पापा को धक्का देकर गिरा दिया और टूटे पैर पर लात मारने लगा। मेरे बाल घसीटते हुए गाड़ी में डालकर थाने ले गए। बस्ती के 10-11 और लोगों को भी पकड़ लिया था। थाने में चोरी के झूठे आरोप में 8 दिनों तक हमारे साथ मार-पीट की। हम उनसे बार-बार बोल रहे की हमने कोई चोरी नहीं

की। मेरी माँ, पापा की देखभाल के लिए मुझे 2000 रुपए देकर गई थी। जो मैंने गद्दे में छुपाकर रखे थे। हमारे पैसे की चोरी का इल्ज़ाम हम पर ही लगाया गया।

हमें इतना मारा कि बिल्कुल चलते नहीं बन रहा था। हम लोगों पर झूठा केस लगाकर जेल भेज दिया। किशोर न्यायलय के शेल्टर होम में आते ही हमें फिर से जमकर पीटा गया। इतना तो हमें थाने में भी नहीं मारा था। शेल्टर होम में जानवरों-सा सुलूक होता। बच्चों की जेल में हमने 17 दिन गुज़ारे।

मैंने इस केस में एक साल पेशी लड़ी। फिर धीरे-धीरे कबाड़ बीनना छोड़ दिया। पर मेरे पास कोई रोज़गार नहीं था। थोड़े दिन इधर-उधर भटकने के बाद मैंने नया काम शुरू किया। मैं वेटर बना। मुझे वेटरगीरी से 80 रुपए मिलते थे। मैंने आठवीं पास की फिर दसवीं भी। दसवीं के बाद पैसों की तंगी के कारण पढ़ाई छोड़ दी। उन दिनों काम की तलाश में मैं काफी घूमा। जो भी काम मिलता मैं उसे कर लेता। जैसे तगाड़ी उठाना, पेन्टर, वेटर, होटल में काम।

मैंने अपने बहुत से लोगों को घर और पुलिस की परेशानियों, जाति और पंचायत की मुश्किलों में जूझकर मरते देखा है। महिलाओं को चौराहे पर पिटते देखा है। मुझे कभी समझ में नहीं आता था कि लोग कैसे खुद को खुदकुशी के लिए तैयार करते हैं, पर अब वैसी घटनाएँ मेरे साथ घटने लगी थीं। काम कर घर पर आता तो खाना नहीं मिलता, घर पर झगड़ा होता। पापा मुझे घर में नहीं घुसने देते। मैं घर के बाहर सोता। चाहे ठण्ड हो या बारिश हो। तंग आकर मेरे मन में भी दो बार खुदकुशी करने की इच्छा हुई। एक बार फाँसी लगाने की कोशिश की। दूसरी बार हाथ काटकर मरने की ठानी पर नहीं मरा। फिर मैं भोपाल छोड़कर बाहर चला गया। दो महीने तक किसी से भी फोन तक पर बात नहीं की। फिर भोपाल लौटकर अपने पिछले काम में जुट गया। फिर वेटरगिरी की। फिर बारहवीं पढ़ने का मन बनाया। और एक ही बार में 12वीं निकाल ली। अभी मैं बीए कर रहा हूँ। साथ में शहरी मज़दूर संगठन में बस्ती एकता के लिए काम कर रहा हूँ। सोचता हूँ अपने और अपने समुदाय के हक के लिए जितना हो सके लड़ूँ...और लड़ूँ...और जीतूँ...

चक मक

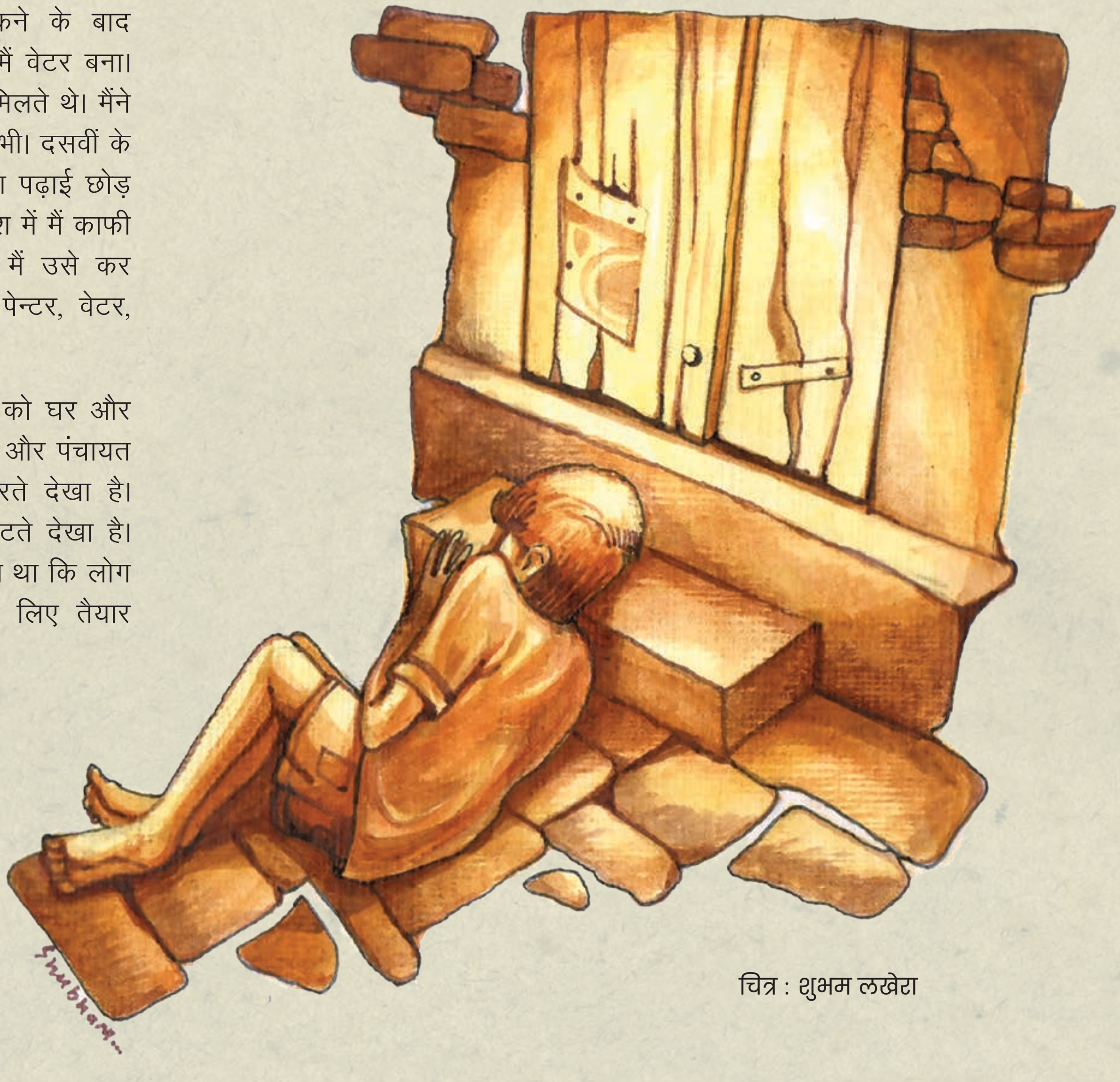

चित्र : शुभम लखेरा

पारधी इतिहास

तस्वीर एक ऐसे समाज से है जो पिछले दो सौ वर्षों से शोषण का शिकार है।

ऐसा मानते हैं कि पहले पारधी को भगवान ने जाल से शिकार करना सिखाया ताकि उनको गोली चलाने का पाप नहीं करना पड़े। आज तक पारधी बंदूकों या किसी भी तरह के हथियारों का उपयोग नहीं करते हैं। पारधियों के अलग अलग कुनबे हैं जो अलग अलग काम के लिए जाने जाते हैं। जैसे कोई पंछियों को जाल में फँसाते हैं, कोई छोटे जानवरों का शिकार करते हैं, कोई मगरमच्छ का शिकार करते हैं, तो कोई बैलों पर सामान लादकर व्यापार करते हैं।

कई जगह राजाओं और ज़मींदारों ने शिकार करने के लिए पारधियों की मदद ली और अपने राज्य में उन्हें बसने को कहा। बाद में गाँव के किसानों ने भी अपने खेतों की जंगली जानवरों से रक्षा के लिए पारधियों को बुलाया।

लेकिन पारधी लोग एक जगह घर बनाकर नहीं बसे। वे लगातार घुमक्कड़ जीवन जीते थे। वे बस्तियों से दूर पहाड़ या जंगलों के पास डेरे बाँधकर रहते थे। मर्द जंगल में जाल बिछाकर शिकार करते थे तो महिलाएँ माला और चूड़ियाँ बेचने गाँव में जाती थीं।

अँग्रेज़ सरकार और घुमक्कड़ लोग

1760 के बाद भारत में अँग्रेज़ों का राज हुआ। वे घुमक्कड़ जातियों से बहुत खफा थे। घुमक्कड़ लोगों से लगान वसूल करना मुश्किल था। वे लोग अँग्रेज़ शासन का विरोध करते थे और कई बार विद्रोह भी किया। बहुत से घुमक्कड़ लोग जंगलों पर निर्भर थे मगर अँग्रेज़ सरकार जंगलों पर अपना नियंत्रण करना चाहती थी

ताकि पेड़ काटकर व्यापार करे और नये जंगल लगाकर उसका भी व्यापार करे। कुछ घुमक्कड़ लोग जंगलों और पहाड़ों के बीच के रास्तों की रक्षा करते थे और वहां से गुज़रने वाले व्यापारियों से टैक्स लेते थे। अँग्रेज़ उन रास्तों पर अपना नियंत्रण चाहते थे और जंगल के लोगों के वहाँ से भगाने लगे। जंगलों पर अँग्रेजों के नियंत्रण का कई जातियों ने विरोध किया। इनके विरोध को देखते हुए 1872 में एक कानून बनाया, जिसे अपराधिक जाति कानून (क्रिमिनल ट्राईब्स एक्ट) कहते हैं। इस कानून के अनुसार-

से सरकार –

- कोई भी अफसर किसी भी जाति/लोगों के समूह को अपराधिक जाति का ठप्पा दे सकती थी।
- गांव में आने पर मुखिया या हवलदार के पास अपना पंजीयन करना ज़रूरी था। नहीं करने पर जुर्माना और सज़ा हो सकती थी।
- जाति के हर इंसान को अपनी उँगलियों के छाप पुलिस के पास दर्ज करना होता था।
- बच्चों को उनके माँ बाप से ज़बरदस्ती अलग हटाकर किसी जगह में सुधारने के लिए रखा जा सकता था।
- जाति के सब लोगों को सरकारी निगरानी में कैम्पों में रहने के लिए बाध्य किया जा सकता था।
- पहले अपराध के बाद सज़ा बहुत कठोर हो जाती थी। जैसे दूसरी चोरी के लिए 10 साल की कैद और तीसरे अपराध में उम्र कैद।

स्वतंत्रता के बाद

1952 में भारत सरकार ने अपराधिक जाति कानून को खतम किया। उसके अन्तर्गत आनेवाली जातियों को विमुक्त जाति (डीनोटिफाईड ट्राईब्स) कहा गया। लेकिन बाकी समाज और पुलिस उनसे पहले जैसा ही व्यवहार करते रहे। यहाँ तक कि एक और कानून बना – आदतन अपराधी कानून जिसके तहत उनके साथ पुराने कानून जैसा ही व्यवहार किया जा सकता था।

1972 – वन्यपशु सुरक्षा कानून: वन्य जीवजन्तु के संरक्षण के लिए बनाये गए कानून ने सदियों से जंगलों में रहनेवाले समुदायों को जंगलों से खदेड़ दिया। अभ्यारण्य (सैंचुरी) व आरक्षित जंगलों को जानवरों के लिए सुरक्षित जगह बनाते हुए रातोंरात जंगल पर आधारित लोगों की रोज़ी रोटी को खत्म कर दिया।

लोगों को पुनर्स्थापित करने के प्रयास सफल नहीं हुए हैं। अपराधिक जाति का ठप्पा और आजीविका के साधन नहीं होते हुए कई विमुक्त जातियां अभी भी हाशिए पर रह रही हैं। कुछ पारधियों को बंजर ज़मीन आवंटित हुई मगर किसी और योजना की ज़रूरत के चलते वापस भी ले ली गई है। समाज में पारधी जाति के लोगों को अभी भी शंका की नज़र से देखा जाता है। किसी भी चोरी में अभी भी इन जातियों के लोगों पर पुलिस की पहली नज़र होती है। चोरी नहीं की हो, तब भी उसको स्वीकारने के लिए मारना आम बात है। पारधी औरतों के साथ बदतमीज़ी और यौनिक हिंसा की घटनाएं, बच्चों को मारना और आदमियों के साथ अमानवीय रूप से हिंसा जारी है।

भोपाल में पारधी समुदाय की औरतें कबाड़ बीनने का काम करती हैं। बच्चे भी माँ के साथ कचरे से उपयोग में आने वाले माल छाँटने का काम करते हैं। पुलिस के डर से आदमी इस काम के लिए घर से बाहर नहीं जाते है। वे घर पर कबाड़ छांटने में मदद करते हैं। कुछ आदमी मेलों में और बाज़ार में माला-अँगूठी की दुकान लगाते हैं। इस जिले में रह रहे 3000 से भी ज़्यादा पारधी परिवारों में ऐसे 10 लोग भी नहीं हैं जिन्होंने 8 वीं कक्षा भी पूरी करी हो।

मुस्कान संस्था भोपाल के पोस्टर "हमारी ज़िन्दगी-पारधी" से साभार चकमक

चित्र : कनक शशि

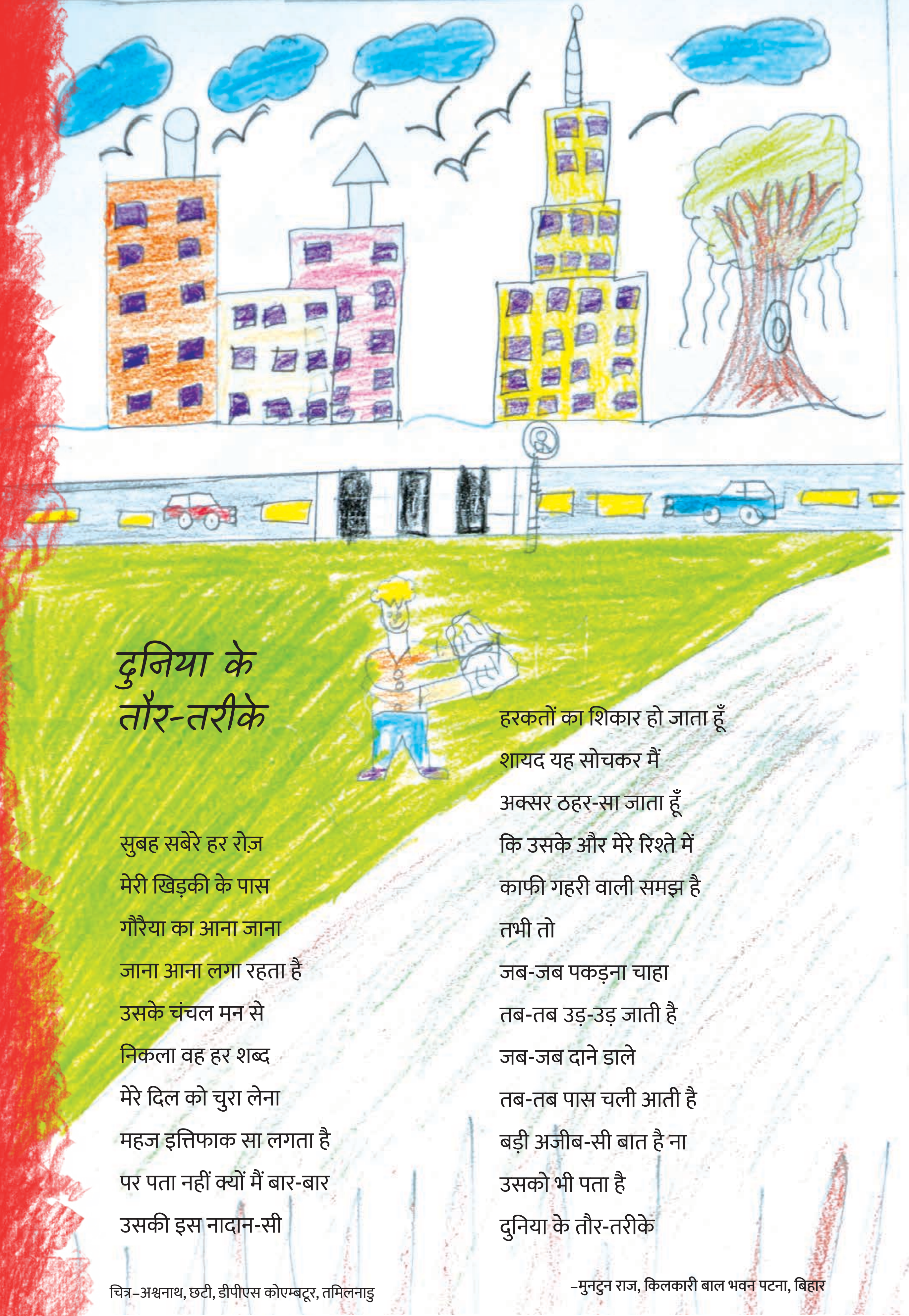

दुनिया के तौर-तरीके

सुबह सबेरे हर रोज़
मेरी खिड़की के पास
गौरैया का आना जाना
जाना आना लगा रहता है
उसके चंचल मन से
निकला वह हर शब्द
मेरे दिल को चुरा लेना
महज इत्तिफाक सा लगता है
पर पता नहीं क्यों मैं बार-बार
उसकी इस नादान-सी
हरकतों का शिकार हो जाता हूँ
शायद यह सोचकर मैं
अक्सर ठहर-सा जाता हूँ
कि उसके और मेरे रिश्ते में
काफी गहरी वाली समझ है
तभी तो
जब-जब पकड़ना चाहा
तब-तब उड़-उड़ जाती है
जब-जब दाने डाले
तब-तब पास चली आती है
बड़ी अजीब-सी बात है ना
उसको भी पता है
दुनिया के तौर-तरीके

चित्र-अश्वनाथ, छटी, डीपीएस कोएम्बटूर, तमिलनाडु

–मुनटुन राज, किलकारी बाल भवन पटना, बिहार

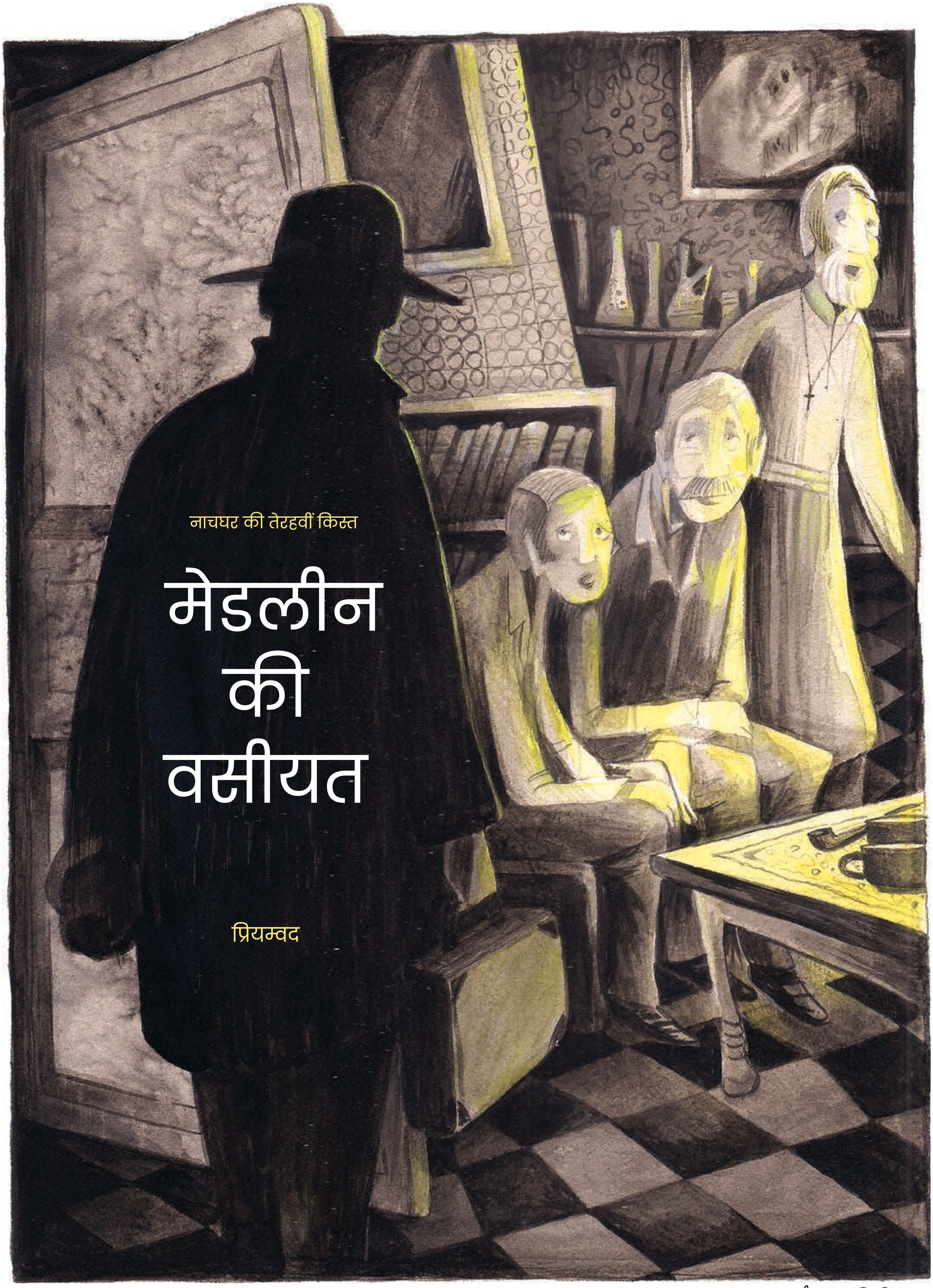

नाचघर की तेरहवीं किस्त

मेडलीन की वसीयत

प्रियम्वद

यह लन्दन की एक शाम थी। यह मेडलीन का सौवाँ जन्मदिन था।

एक बड़े चौकोर कमरे में तीन आदमी बैठे थे। कमरे की दीवारों पर रंगीन लैम्प शेड्स में बल्ब लगे थे। इनसे पीली रोशनी गिर रही थी। इस रोशनी में शेर की खाल थी। हिरन के सींग थे। कुछ पुरानी नक्काशी के बर्तन थे। किताबों से भरी बड़ी अलमारी थी। पहली नज़र में यह पुराना और धनी घर दिखता था।

इन तीन आदमियों में एक की उम्र साठ साल के आसपास थी। उसकी मूँछें घनी और सलीके से कटी हुई थीं। भौहों के बाल भी घने थे। चेहरे की खाल कसी हुई थी। जबड़े मज़बूत थे। उसके होंठों में एक मोटा सिगार दबा था। जलते सिगार के तम्बाकू की महक कमरे में थी। वह बड़े और भारी सोफे के एक ओर बैठा था। इस सोफे के दूसरी ओर कम उम्र का लड़का बैठा था। वह चालीस साल का था। यह पहले वाले आदमी की बहन का लड़का था। इसके बाल उड़े हुए थे। माथा चौड़ा और सलवटों से भरा था। चेहरा लम्बा था। खाल पतली थी। तीसरा आदमी सोफे के सामने रखी बड़ी कुर्सी पर बैठा था। वह पादरी था। वह जिस तरह बैठा था उससे लग रहा था कि वह इन दोनों से पहले से परिचित नहीं है। तीनों चुपचाप कभी एक-दूसरे को देखते कभी खिड़कियों से बाहर गिरती बारिश को। खिड़कियाँ बन्द थीं इसलिए बाहर की तेज़ और बर्फीली हवा अन्दर महसूस नहीं हो रही थी। काँच पर गिरती बारिश की बूँदों का शोर था। वे तीनों बेचैनी से वकील माइकेल कार्नेगी का इंतज़ार कर रहे थे। वकील कार्नेगी बैंक के लॉकर में रखी मेडलीन की वसीयत लेने गए थे। वसीयत लाकर उन्हें यहाँ पढ़ना था। इसी वसीयत से मालूम होना था कि मेडलीन नाचघर किसको दे गई है? अब उसका मालिक कौन है? इसी समय लन्दन के एक होटल में काला बच्चा भी बेचैनी से एक फोन का इन्तज़ार कर रहा था। नाचघर का मालिक पता होने के बाद वह उसका पूरा सौदा करके ही भारत लौटना चाहता था। सोफे पर बैठे दोनों आदमी मेडलीन के परिवार के थे। बड़ी उम्र का आदमी मेडलीन का भतीजा था। कम उम्र का लड़का इस आदमी का भाँजा था। इस परिवार के ये आखरी सदस्य थे जो मेडलीन के सम्पर्क में उसके साथ रहे थे। यह एक बड़ा, भरा-पूरा परिवार था जिसका अपना एक इतिहास था जो ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लन्दन दफ्तर से लेकर कलकत्ता के घाटों और अवध की गलियों और नाचघर तक फैला था। इस परिवार के बहुत से लोगों की कब्रें हिन्दुस्तान में थीं।

तीन पीढ़ी पहले इस परिवार को काली मिर्च ने बहुत धन दौलत दी थी। सिर्फ इस परिवार को ही नहीं इंग्लैण्ड, फ्रांस, पुर्तगाल और हॉलैण्ड के दूसरे परिवारों को भी। दरअसल दुनिया का पूर्वी हिस्सा मसालों के लिए मशहूर था। काली मिर्च के अलावा लौंग, जायफल, इलायची और अदरक भी। यूरोप के बेहद सर्द मौसम में कुछ ही महीने ताज़ा माँस मिल पाता था। माँस को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए वे मसालों का इस्तेमाल करते थे। इसके अलावा इन मसालों के बगैर माँस में कोई स्वाद भी नहीं आता था। यूरोप के बाज़ारों में इन मसालों की बहुत कीमत थी। इन्हें तलाशने और पाने के लिए, पुरुष अनजान देशों की लम्बी समुद्री यात्राओं के लिए तैयार थे। ये मसाले दवाओं में भी काम आते थे। पूर्वी दुनिया, खासतौर से भारत, मसालों के अलावा अपनी धन-दौलत और वैभव के लिए भी मशहूर था। मुगल बादशाहों की ऐश, इमारतों, दरबारों, रहन-सहन और हीरे-जवाहरातों के किस्से पूरी दुनिया में फैले थे। ऐसे समय में सन् 1600 की आखरी रात के आखरी घण्टों में, रानी एलिज़ाबेथ ने अपना नाम लिखकर और शाही मुहर मारकर, लन्दन के कुछ बहुत मामूली लोगों की कम्पनी को दुनिया के इस हिस्से में व्यापार करने की इजाज़त दे दी थी। एलिज़ाबेथ को तब नहीं मालूम था कि मामूली लोगों की यह कम्पनी एक दिन हिन्दुस्तान पर राज करेगी।

कम्पनी का व्यापार चल निकला। यूरोप के देशों में अकूत धन आने लगा। कम्पनी में नौकरी करने और समुद्रों पर यात्रा करने वाले नौजवानों की संख्या बढ़ने लगी। इन्हीं में रॉबर्ट क्लाइव के साथ लन्दन की सड़कों पर आवारा घूमने वाला एक लड़का जोनाथन भी था। क्लाइव के साथ वह भी कम्पनी में नौकर हुआ और हिन्दुस्तान आ गया। प्लासी की लड़ाई में वह कम्पनी के मामूली क्लर्क की तरह लड़ा था। बाद में क्लाइव इंग्लैण्ड लौट गया पर जोनाथन कलकत्ता में रह गया। वहाँ उसने हुक्का पिया, पगड़ी बाँधी, नाच देखा, जानवरों की लड़ाई देखी और बांग्ला बोलना सीखा। जॉब चार्नक ने जिस दलदली ज़मीन पर कलकत्ता की नींव डाली थी, वह कलकत्ता तब तक दुनिया के सबसे बड़े शहरों में एक हो

चुका था। उसके लिए न जाने कितने कवित्त रचे गए। इस कलकत्ता के गीतों में काली माई थी, काला जादू था, बंगाली औरतों के लम्बे काले बाल थे। यह कलकत्ता उन सैकड़ों स्त्रियों के दुख भरे गीतों में था जिनके पति उन्हें छोड़कर नौकरी की तलाश में कलकत्ता आए थे और जिनके किसी सौतन के जाल में फँस जाने का डर था।

जोनाथन ने बहुत साल ईस्ट इण्डिया कम्पनी में काम किया। बहुत धन कमाया। वह छोटे-मोटे ज़मींदार की तरह रहने लगा। उसने इंग्लैण्ड से अपने कई रिश्तेदारों को भी हिन्दुस्तान बुला लिया। सबने यहाँ अलग व्यापार किया – ज़मीनें खरीदीं। बाद में इन्हीं के परिवार का हार्डी घोड़ों और बग्घियों का कारोबार करने लगा। वह लखनऊ आ गया। यहाँ उसने नवाबों की बग्घियाँ बनाईं। घोड़ों को खरीदने-बेचने का व्यापार किया। सेना को रसद भी देने लगा। तब गंगा किनारे बसा यह शहर नदी से व्यापार करने का सबसे बड़ा केन्द्र था। अँग्रेज़ी फौज की सबसे बड़ी छावनी थी। हार्डी इस शहर में आ गया और यहीं काम करता रहा। 1857 के गदर में वह शहर से भाग गया। एक नाचने वाली ने उसे आठ महीने अपने घर छुपाकर रखा। गदर खत्म होने और अँग्रेज़ों के वापस शहर जीत लेने के बाद हार्डी लौट आया। तब उस नाचने वाली की याद और सम्मान में हार्डी ने इस जगह नाचघर बनाया। मेडलीन इसी हार्डी की बेटी थी। हार्डी की मृत्यु के बाद उसकी सारी सम्पत्ति मेडलीन को मिली। नाचघर, लन्दन की जायदाद, घर, बैंक का रुपया और अवध की बेगमों के बहुत-से जवाहरात। हिन्दुस्तान से लौटने के बाद मेडलीन इसी घर में रही जहाँ वे तीनों बैठे थे। वह लम्बी उम्र जी। अपनी पहली वसीयत में वह अपना सबकुछ भाई, बहन और उनके बच्चों के नाम कर गई, सिवाए नाचघर के। अपनी पहली वसीयत में लिख गई थी कि उसकी दूसरी वसीयत उसके सौंवे जन्मदिन पर लॉकर से निकालकर पढ़ी जाए। यह वही सौवाँ जन्मदिन था। ये तीनों आदमी माइकल कॉर्नेगी का इन्तज़ार कर रहे थे। वह बैंक से वसीयत लेकर किसी भी क्षण आनेवाले थे।

दरवाज़ा खुला। माइकल कॉर्नेगी अन्दर आए। वह भीग गए थे। दरवाज़े पर रखे लकड़ी के ऊँचे स्टैण्ड की एक खूँटी पर उन्होंने अपना हैट टाँगा। दूसरी खूँटी पर गीला लम्बा कोट। गीले जूते भी उतारे। पास में रखे दूसरे जूते पहने। उनके एक हाथ में ब्रीफ़केस था। दूसरे में एक गोल डिब्बा।

“कम्बख्त बारिश,” बड़बड़ाते हुए माइकेल कॉर्नेगी आगे आए और सोफे के सामने पड़ी दूसरी खाली कुर्सी पर बैठ गए।

“आपको तकलीफ़ दी फादर,” उन्होंने पादरी से कहा, “पर गवाह के रूप में चर्च के प्रतिनिधि का होना ज़रूरी था। यह पहली वसीयत में लिखा था।” पादरी मुस्कराए। कुछ बोले नहीं। माइकल ने सामने रखी लम्बी मेज़ पर ब्रीफ़केस रख दिया। डिब्बा भी। डिब्बे पर चाँदी की परत चढ़ी थी। उसकी कुण्डी को कपड़े और लाख से सील किया गया था। सील के कपड़े पर लिखा था, ‘टू बी ओपन्ड ऑन हन्ड्रेड्थ बर्थडे ऑफ मेडलीन।’ थोड़ी साँस लेकर, थोड़ा संयत होकर माइकल कॉर्नेगी ने तीनों को देखा, “तो डिब्बा खोलें?”

“हाँ,” ज़्यादा उम्रवाला बोला। उसकी आवाज़ में थरथराहट थी। अन्दर से वह उत्तेजित था। मेडलीन अपने भाइयों में उसके पिता को सबसे ज़्यादा प्यार करती थी। ज़्यादातर सम्पत्ति उसी को दे गई थी जो पिता से उसको मिली थी।

माइकल ने ब्रीफ़केस से अपना चश्मा निकाला। एक छोटी कैंची निकाली। कैंची से सील का धागा काटा। डिब्बा खोला। अन्दर रोल किए हुए कुछ कागज़ थे। मखमल के कपड़े में दो बड़े हीरे थे। एक चाँदी की डिबिया थी। उसने डिबिया खोली। उसमें बालों की एक लट थी। उसने डिबिया बन्द करके रख दी। अब कागज़ खोले। खूबसूरत हस्तलिपि में काली स्याही से लिखा था। माइकल ने एक बार तीनों को देखा फिर चश्मा नाक पर टिकाकर पढ़ने लगा –

“मेरा नाम मेडलीन है। अपनी पहली वसीयत में मैं अपने और परिवार के बारे में सब लिख चुकी हूँ। उसी वसीयत में मैं अपनी सारी सम्पत्ति, जो अपने पिता की अकेली सन्तान होने के कारण मेरी थी और जिसकी मैं अकेली हकदार थी, अपने रिश्तेदारों में बाँट चुकी हूँ, सिवाय नाचघर के! मैंने अपनी पहली वसीयत में नाचघर किसी को नहीं दिया। यह जानना ज़रूरी है कि मैंने ऐसा क्यों किया और अब क्यों, अपने सौंवे जन्मदिन पर यह वसीयत सबको पढ़ा रही हूँ।

“सरकारी कागज़ों और समस्त व्यवहारिक रूपों में भी, नाचघर पर सिर्फ मेरा अधिकार है। पर मैं ऐसा नहीं मानती। जिस दिन नाचघर में मैं पियानो वाले से नाच का मुकाबला हारी थी, मैंने उसे दो चीज़ें दी थीं। पहली, एक चाँदी की डिबिया में रखकर अपने बालों की लट। दूसरी, अपना मृगछौंना हृदय। हमने अथाह प्रेम किया। हमारे जीवन में कुछ नहीं था सिवाय संगीत, नृत्य, और सपनों के। फिर एक दिन दुनिया की पहली बड़ी लड़ाई शुरू हो गई। वह अँग्रेज़ी फौज में था। उसकी टुकड़ी को फ्रांस के किसी गाँव में लड़ने के लिए भेज दिया गया। वहाँ कोहरे में एक पुल से गिरकर उसकी मृत्यु हो गई। हमारा सारा जीवन, सारी यादें, सारे सपने नाचघर में थे। लट के रूप में मैं उसके पास थी। मैं उसकी थी। नाचघर उसका था। मेरा नहीं।

“मैंने अपने सौंवे जन्मदिन तक इसलिए इन्तज़ार किया कि शायद वह जीवित हो। शायद कभी नाचघर लौटे। अपनी उम्र के आखरी हिस्से तक मैंने उसकी प्रतीक्षा की। नाचघर को बचाकर रखा। पर ऐसा नहीं हुआ। अब जब मैं अस्वस्थ रहने लगी हूँ और मेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं है, मैं यह वसीयत कर रही हूँ।

“मैं मेडलीन हेविट पुत्री हार्डी हेविट अपने पूरे होशो हवास और गवाहों के समक्ष यह वसीयत करती हूँ कि मेरे बाद पूरे नाचघर का मालिक वही होगा जिसके पास वह चाँदी की डिबिया और लट होगी जो मैंने पियानोवाले को दी थी। इस वसीयत के साथ बक्से में वैसे ही एक चाँदी की डिबिया और लट रखी है। जो यह दावा करेगा कि उसके पास वह डिबिया और लट है, उसे इससे मिलाया जाएगा। इस डिबिया की तली में हरसिंगार के नौ फूल बने हैं । वैसे ही उस डिबिया में होंगे। इस लट में कभी न खत्म होने वाली गन्ध है। ऐसी ही गन्ध उस लट में भी होगी। यह गन्ध कभी खत्म नहीं होती, इसलिए कि इसे पुराने रोम में चमड़े और गुलाब के अर्क से बनाया जाता था। मैं इस वसीयत के साथ अपने आखरी दो हीरे भी रख रही हूँ। जब यह वसीयत पढ़ी जाएगी, इनका मूल्य लाखों पौंड होगा। ये हीरे इसलिए रखे हैं कि नाचघर के वारिस को ढूँढने का काम इन्हें बेचकर मिलने वाले धन से किया जा सके। उन्हें ढूँढने के लिए हिन्दुस्तान के सभी अखबारों में विज्ञापन दिए जाएँ। ये विज्ञापन हर एक महीने बाद पूरे मुल्क में साल भर तक निकलें। यदि उसके बाद भी कोई सामने नहीं आता तो नाचघर शहर के सबसे बड़े पुराने चर्च को दे दिया जाए। हीरों से बची धन राशि नाचघर की मरम्मत सफाई और देखभाल में खर्च हो।

“मैं अपने समस्त रिश्तेदारों से अनुरोध करती हूँ कि इस वसीयत को पढ़े जाने के बाद मेरी अन्तिम इच्छा को पूरा करें। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि नाचघर को उसका असली वारिस मिल जाए।”

- मेडलीन हेविट

चित्र : प्रशान्त सोनी

माइकल कॉर्नेगी ने एक गहरी साँस ली। सबको देखा फिर कागज़ रोल करके वापस डिब्बे में रख दिए।

"अब?" माइकल ने बड़े आदमी की ओर देखा। उसने एक नया सिगार जला लिया था।

"हमें इस वसीयत की एक कॉपी पादरी हेबर को भेज देनी चाहिए। वह इसे पढ़ भी लें और विज्ञापन का इन्तज़ाम भी करें।"

"और वह बिल्डर जो आया है?" लड़के ने पूछा।

"उसे यह सब बताने की ज़रूरत नहीं है," सिगार का खुशबूदार धुआँ छोड़ते हुए वह आदमी बोला, "नाचघर उसी के पास जाएगा जिसे वसीयत में हक दिया गया है।"

"ठीक है," माइकल कॉर्नेगी उठ गए। "मैं वसीयत की कॉपी करके डिब्बा वापस लॉकर में रख देता हूँ। जब दावेदार आएगा हम इसे फिर निकाल लेंगे।"

"हाँ... यही ठीक है।" वे तीनों भी उठ गए। घर उसी बड़े आदमी का था। दरवाज़े तक वह सबके साथ आया। माइकल कॉर्नेगी ने अपना जूता बदला। ओवरकोट और हैट लिया। सब दरवाज़े से चले गए। दरवाज़ा बन्द करके वह आदमी लौटा। जिस होटल में काला बच्चा ठहरा था, उसने वहाँ फोन मिलाया। कमरे का नम्बर माँगा। काला बच्चा बेसब्री से उसके फोन की प्रतीक्षा कर रहा था।

"नाचघर तुम्हें नहीं मिल पाएगा," वह आदमी थरथराती आवाज़ में बोला।

"क्यों? क्या रोक रहा है?"

"एक लट।" उस आदमी ने कहा और फोन रख दिया।

जारी...

मेंढक और टूथपेस्ट

फ्रांत्स होलर, निकोलाउस हाइडलबाख़
(जर्मन से अनुवाद- अमृत मेहता)

एक मेंढक था, जिसके दाँत हमेशा गन्दे रहते थे। वे सिर्फ गन्दे ही नहीं थे, पूरे काले थे। वो इसलिए कि वह मक्खियाँ बहुत खाता था और मक्खियाँ तो काली होती हैं। अब चूँकि वह एक कोयले की खान के पास रहता था तो मक्खियाँ और भी ज़्यादा काली थीं - पहाड़ी कौवों की तरह काली। इस पर उसे चॉकलेट खाना भी बहुत पसन्द था। सबसे ज़्यादा उसे पसन्द था दो चॉकलेटों को एक के ऊपर एक रखना और बीच में दो-चार मक्खियाँ मसल कर डालना। इसे वह मक्खी सैंडविच कहता था।

परन्तु एक दिन मेंढक के दाँत में इतना ज़बरदस्त दर्द हुआ कि उसे डॉक्टर के पास जाना पड़ा।

उसके मुँह में झाँक के देखकर डॉक्टर ने पूछा कि क्या वह काली मक्खियाँ खाता था?

मेंढक ने चुपचाप हाँ में सिर हिलाया।

“और आप क्या काली चॉकलेट भी खाते हैं?” डॉक्टर ने आगे पूछा।

“हर्र-हर्र”, मेंढक ने टर-टर किया और ज़रा सा शर्माया भी। डॉक्टर ने उसे लाल धारियों वाला एक सफ़ेद टूथपेस्ट दिया।

“हर बार खाने के बाद इससे दाँत साफ़ करना और मक्खियाँ व चॉकलेट खाना फ़ौरन बन्द कर दो,” उन्होंने समझाया।

मेंढक खुश था कि डॉक्टर ने दाँत की खुदाई नहीं की, उछलता हुआ कोयले की खान के तालाब वाले अपने घर में गया और नए टूथपेस्ट को आज़माने लगा।

उसे इतना स्वाद आया कि अब से वह अपना मक्खी-सैंडविच खाने से पहले उस पर पेस्ट की आधी ट्यूब भी चुपड़ने लगा। इससे कोई फ़ायदा नहीं हुआ और इस तरह मेंढक के सारे दाँत एक-एक करके गिर गए।

“क्या मतलब?”

“मेंढकों के तो दाँत ही नहीं होते?”

“सही कहा, अब नहीं होते।”

चक मक

चित्र: नीलेश गहलोत

(मेरी बड़ी किताब, वाणी प्रकाशन से साभार)

कूना के घर में पाला हुआ एक चूज़ा नन्हा बादल

विनोद कुमार शुक्ल

कुछ कुछ दिन पहले की एक घटना थी। कूना और बोलू थे। वे दोनों बौने पहाड़ पर चढ़ रहे थे, जहाँ से चढ़ना कठिन था। इस तरफ की चट्टानें खड़ी थीं। उन्हें एक ऐसी खड़ी चट्टान दिखी जिसे देखकर लग रहा था कि इस चट्टान को खड़ी रखने में उस पर लिपटी, बँधी, लताओं का हाथ है। अगर लताएँ नहीं होतीं तो वह ऊँची चट्टान जो थोड़ी-सी झुकी है, गिर जाती। लताओं ने उसे बाँधकर रोका था। चट्टान की एक तरफ की लताएँ सूख गई थीं और मोटी रस्सी की तरह दिख रही थीं।

आश्चर्य यह था कि अपने ऊपर लताओं की हरियाली से यह खम्बे जैसी चट्टान, चट्टान के पेड़ की तरह लगती थी। जैसे तना पत्थर का है और जड़ें भी पत्थर की होंगी।

बोलू और कूना उसी चट्टान पर लताओं को पकड़कर ऊपर चढ़ रहे थे। खड़ी चट्टान पर चढ़ते, थक जाते तो लताओं पर पैर जमाकर पलट जाते और चट्टान पर पीठ टिकाए सुस्ताते। सुस्ताने के बाद फिर पलटकर चढ़ने लगे। जैसे पेड़ पर चढ़ रहे हों और ऊपर फल लगे हैं। जिन्हें उन्हें तोड़ना है।

आखिर बोलू पहले चट्टान के शिखर पर पहुँचा। थोड़ी देर में कूना भी आ गई। शिखर पर पतली टहनियों से बना एक घोंसला था। घोंसला बहुत बड़ा था। किसी विशाल पक्षी का। घोंसले में बैंगनी रंग के पाँच गोल-गोल अण्डे थे। कूना ने एक अण्डे को उठाना चाहा, पर उठा नहीं सकी। या अण्डा बहुत भारी था या चट्टान से जुड़ा हुआ था। बोलू ने अण्डे को उठाया तो उसने उसे उठा लिया।

“जिस अण्डे को मैंने उठाया वह बहुत भारी था,” कूना ने कहा।

“हाँ! भारी है, यह भी भारी है।” बोलू ने कहा।

“बोलू, मेरे वाले अण्डे को भी उठाओ। वह नहीं उठेगा,” कूना ने कहा। कूना को लग रहा था कि वह उठा नहीं सकी पर बोलू ने उठा लिया। उसे अच्छा नहीं लगा। बोलू ने सभी अण्डों को उठाकर देखा और सावधानी से रख दिया था।

“पता नहीं ये सचमुच अण्डे हैं या भारी पत्थर?” कूना ने कहा।

बोलू भी सोच रहा था कि ये सचमुच के अण्डे नहीं हो सकते। घोंसले की लकड़ी, लकड़ी नहीं लग रही थी। पत्थर की लकड़ी लगती थी। बोलू ने घोंसले की टहनी के कोने को तोड़ना चाहा पर तोड़ नहीं सका।

वे दोनों चारों तरफ देख रहे थे। जो घर उन्हें दिखते उन्हें पहचानने की कोशिश करते कि किसका घर है। छोटे-छोटे वे घर दूर होने की वजह से और यहाँ की बौनी ऊँचाई से देखने पर भी बहुत छोटे लग रहे थे। यद्यपि यह चट्टान सबसे ऊँची थी।

बाबूलाल होटल नहीं दिख रही थी पर बाबूलाल होटल के दिखने और नहीं दिखने का मामला यहाँ की ऊँचाई से नहीं था। उसके सामने खड़े रहें, होटल बन्द हो जाए तो नहीं दिखती। फिर उसके दिखने की जगह भी निश्चित नहीं थी। बाबूलाल होटल अगर बन्द हो तो वह कहीं भी नहीं होती और खुली होती तो कहीं भी हो सकती थी।

हल्कारे, बाबूलाल होटल के नाम की चिट्ठी लाते थे तो वे उसे खरगोश के किसी भी बिल में डाल देते थे। और महराज को चिट्ठी पहुँच जाती थी। महराज कहीं भी रहें, होटल कहीं रहे पर बिल से वे जुड़े रहते थे। खरगोश के बिल उनके संचार का जाल था, जो ज़मीन के नीचे बिछा था। बाबूलाल महराज होटल के नहीं दिखने पर जहाँ भी हों उन्हें चिट्ठी मिल जाती थी।

कूना आकाश को निहार रही थी। आकाश बादलों से साफ था। एक बहुत छोटा बादल उसे दिखा। कूना ने देखा, छोटा-सा यह कपसीला बादल अचानक घना हो रहा था। ऐसा लग रहा था कि वह ज़ोरों से घुमड़ता हुआ आकाश में कहीं नहीं जा रहा है, बल्कि घुमड़ता हुआ इसी तरफ आ रहा है। उसका इसी तरफ आने का दिखना वैसे था जैसे तीर के निशाने में जो है वह तीर को अपनी तरफ आते हुए देख रहा है। कूना ने बोलू को बताया।

बोलू ने देखा, बहुत ऊँचाई से सफेद बादल घुमड़ता हुआ इसी तरफ आ रहा है। क्या बोलू और कूना पर किसी ने बादल का निशाना लगाया है? उन्हें इस निशाने से अपने को बचा लेना चाहिए। बादल का घुमड़ना, फिर ऐसा लगने लगा कि एक पक्षी डैने फड़फड़ाता आ रहा है।

“चलो चट्टान के दूसरी तरफ जाते हैं, जल्दी। पक्षी ने हमें घोंसले से अण्डे उठाते हुए देख लिया था,” बोलू ने कहा।

वे दोनों चट्टान के दूसरी तरफ हरी लताओं को पकड़े हुए छुप गए। फिर उन्होंने छुपे-छुपे देखा कि सफेद बादल उनके पास आकर फिर उड़ गया और आकाश में ओझल हो गया।

“उसने पास आकर अण्डों को सुरक्षित देख लिया और लौट गया,” बोलू ने कहा।

“कहीं ऐसा तो नहीं कि उसने हम दोनों को भी पास छुपा हुआ देख लिया हो और किसी दूसरे पक्षी को बताने चला गया हो। मुझे लगता है वे सब फिर आएँगे,” कूना ने कहा।

क्या! ऐसा हो सकता है कि

बादल पहले न रहते हों

और आसमान में बादल जैसे

धूल के गुब्बारे घुमड़ते हों,

हाँ! हो सकता है कि ऐसा हुआ हो

पहले जल समुद्र में

चुल्लू भर रहता हो।

उतनी भाप न बनती हो

बिना बादल के दो बूँद

बरसात होती हो

आसमान हरदम धूल भरा

रहता हो

केवल ओस की बूँदों से

जीवन बचा रहता हो

अन्तरिक्ष के मलबे से

तब धरती उगी हो।

अबकी बार बोलू ने एक बहुत काले बादल को घुमड़ते देखा, जो उनकी तरफ आ रहा था। हवा ज़ोर से चलने

लगी थी। पेड़ इतनी ज़ोरों से हिलते थे कि जड़ से न उखड़ जाएँ। डालियाँ टूटकर हवा में दूर चली जातीं। चट्टान का पेड़, चट्टान की तरह स्थिर था। लताओं की पत्तियाँ भर टूटकर तेज़ी से उड़ जातीं। कूना और बोलू भी उड़ जाते। पर उन दोनों ने लताओं के जाल में अपने को फँसा लिया था।

उनकी नज़र काले बादल पर थी, जो एक विशाल पक्षी की तरह झपट्टा मारने घुमड़ता आ रहा था। लगता है कि यह नर पक्षी है। सफेद बादल मादा पक्षी हो। ज़रूर मादा, नर पक्षी को बुलाने गई थी।

काला बादल चट्टान के ऊपर आकर बैठ गया। वहाँ अँधेरा छा गया। हरे-भरे पेड़ की छाया भी काली होती है। सफेद कपड़ा पहने आदमी की छाया भी काली होती है। काले बादल की छाया बहुत काले गहरे अँधेरे की थी। यह अँधेरा इतना घना था कि दिन का उजाला

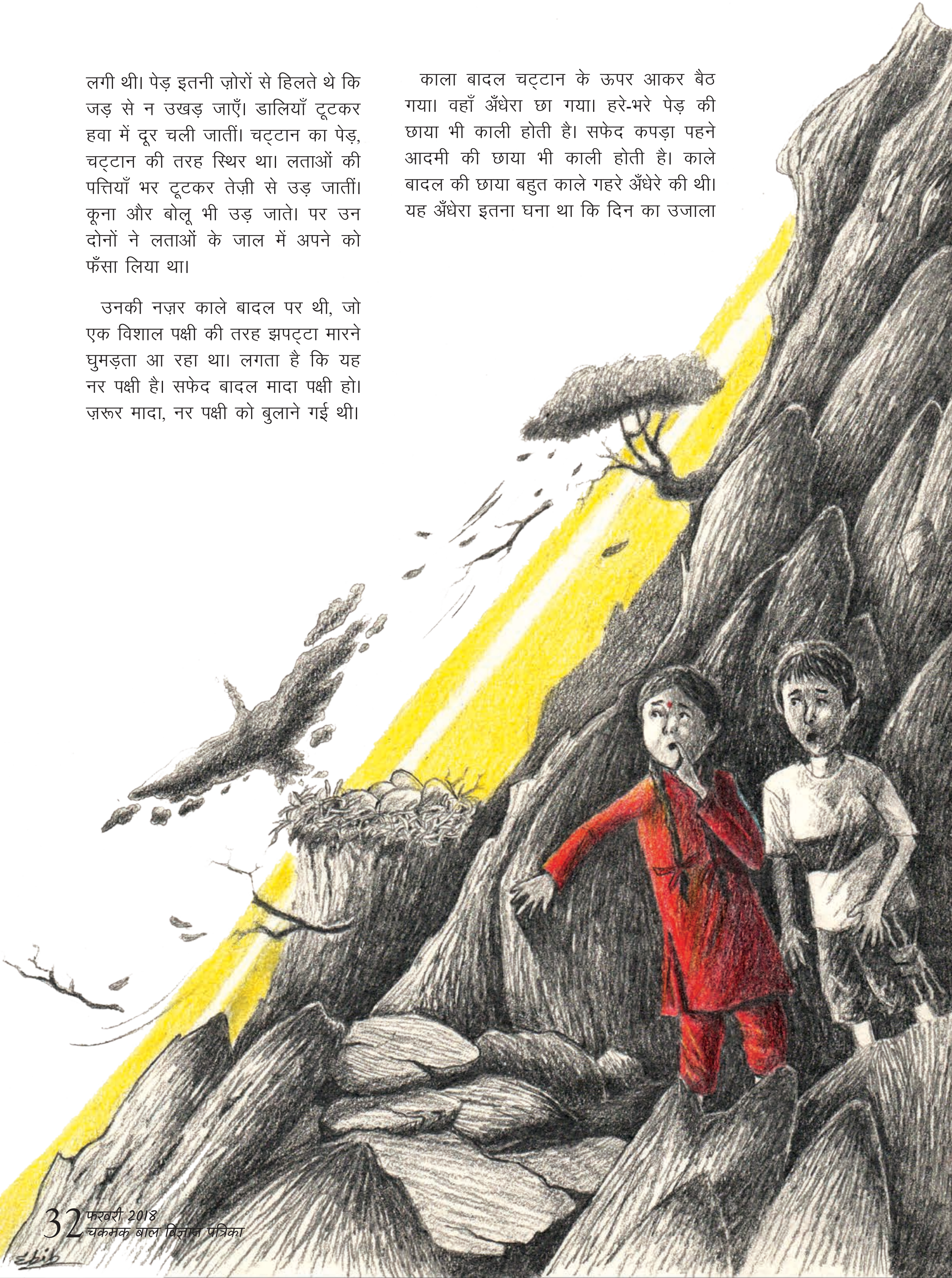

उन्हें वहाँ से कहीं नहीं दिख रहा था। ज़ोरों की हवा थमी नहीं थी। काला बादल स्थिर बैठा था। बस, काले रोएँ जैसा हिलता, फरफराता उसका काला रोएँदार रंग लगता। शायद वह अण्डों को हवा, आँधी से बचा रहा था पर ऐसा नहीं था। वह उड़ गया। ज़ोर की हवा अभी भी चल रही थी पर उसके जाते ही उजाला हो गया। देर बाद हवा शान्त हुई। फिर से उजाला होने के कारण ऐसा लगा कि आज दिन दो बार निकला। दोनों, ज़ोर की हवा में अपनी आँखें बन्द कर लेते थे। हवा में रेत के कणों का थपेड़ा था। लता ने उन्हें बचाया था। लताओं ने चट्टान को इस तरह बाँधकर रखा था कि वह हिली भी नहीं।

बोलू फिर गोल पत्थरों को देखने चट्टान की फुनगी पर पहुँचा। उसने देखा, इतनी आँधी में भी अण्डे सुरक्षित थे। कूना ने भी देखा।

कूना ने कहा, “ये बादल के अण्डे हैं।”

“बोलू! एक अण्डा क्या मैं अपने घर ले जा सकती हूँ? अण्डे से एक छोटा बादल निकलेगा उसे पालूँगी। जब बड़ा हो जाएगा तो आकाश में उड़ जाएगा,” कूना ने कहा।

बोलू का भी मन हुआ। बच्चा-बादल सुबह या शाम के रंग का हुआ तो रंगीन होगा। इन्द्रधनुष की छाप आ गई हो तो कितना सुन्दर होगा! पर बोलू ने मना कर दिया। उनकी कहा-सुनी इस तरह की हुई –

“बादल क्या खाएगा?”

“पानी उबालकर भाप खिलाऊँगी।”

“पानी उबालोगी चूल्हे पर तो धुएँ से बादल का दम घुट जाएगा।”

“भूख लगेगी उसको तो एक थाली में

मैं पानी परोस दूँगी।

आँगन में भरी दुपहरी घाम में

भाप बनती रहेगी

बादल चुगता रहेगा।”

बोलू के मना करने के बाद, लौटते समय कूना ने लौटने से इन्कार कर दिया, कहा कि मैं यहीं इन अण्डों के पास रहूँगी। बोलू ने समझाया अण्डों को अपने घर घोंसले में रहने दो। हम अपने घर चलें।

यह सोचकर अद्भुत लगता था कि इन अण्डों से बादल फूटेंगे। छोटे-छोटे बादल के चूज़े निकलेंगे। जब तक बड़े नहीं हो जाएँगे, उड़ नहीं पाएँगे।

जब पानी गिरानेवाले बादल नहीं बचेंगे, तब क्या करना होगा? तब बादलों को किसी तरह घर-घर पालना होगा। घर के बादल घर में बरस जाएँ। अपने आँगन बरसें, दूसरों के घर आँगन में भी, जैसे बरसात चारों तरफ होती है। अपने घर बिजली चमके तो कान बन्द कर लें। नहानी घर में बादल घुस जाएँ तो उसकी बरसात से नहा धोकर निकलें। कूना बिजली की चमकवाला फ्रॉक नहा-धोकर पहनकर निकले। आकाश में घुमड़ते-घुमड़ते बादल को देखो तो लगता है बादल खेलते हैं। प्रेम करते हैं एक-दूसरे से।

जैसा कूना ने सोचा था –

कूना के घर में पाला हुआ

एक चूज़ा नन्हा बादल

इधर-उधर हवा में लुढ़कता

कूना के आगे-पीछे बस चिपका रहता

दिन भर।

रात को उसको कूना हथेली पर उठा

खिड़की पर रख देती, याद दिलाती

कि एक दिन

उसको आसमान जाना है।

सावन में कुछ बड़ा हुआ

तो गोद में लेकर उसको कूना

झूला झुलाती।

कुछ और बड़ा हुआ तो

झूलते-झूलते कूना ने तब

पेंगा लगाकर पहुँचा दिया उसे

आसमान तक।

अगले सावन और बड़ा होकर
वह आया और आसमान से कूना के आँगन भर बरसा
तो कूना ने उससे कहा
कि बादल अब की जब सावन आना
इतने बड़े हो जाना
कि सबके घर बहुत बरसना
फिर थककर मेरे घर आकर
पानी पीना।
जैसा कूना ने सोचा था -
नहाने का समय हो गया
आया नहीं बादल नहानी घर
गुस्सा आ रहा सबको
जो छोटा था वह तो
ढूँढता सारा घर उघारा हो
कि आए उसको देर हो गई
छुपा हो कहीं
या कुर्सी पर बैठे सो गया
कभी झाँकता आसमान खिड़की से
अचानक बिजली कड़की
आसमान में नहीं
सीधे नहानीघर के अन्दर से
तो जान गए सब
कि बादल घुसा हुआ नहानीघर कब से
गुस्से में मूसलाधार वहाँ बरसने
और सब दौड़ पड़े नहाने ऐसी बरसात में।
जो छोटा वह तो उघारे
बाकी सब कपड़ा पहने।

चित्र : हबीब अली

जारी...

स्वच्छता से समृद्धि

स्वच्छ मध्यप्रदेश

- मध्यप्रदेश में 54 लाख से ज्यादा ग्रामीण घरों में शौचालय बने।
- 2400 से ज्यादा ग्राम पंचायतें खुले में शौच से मुक्त।
- सभी स्कूलों एवं आंगनवाड़ी में शौचालय निर्माण प्रगति पर।
- दो अक्टूबर 2019 तक सभी घरों में होंगे शौचालय।
- इंदौर जिला देश में स्वच्छता में दूसरे नम्बर पर।

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2016

स्वच्छ मध्यप्रदेश सुरक्षित परिवेश

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D82783 24.01.2018

लहराती
अकॉर्डियन किताबें

दीपाली शुक्ला

‘अकॉर्डियन’ नाम सुनते ही ज़ेहन में उस वाद्ययंत्र की तस्वीर उभरती है, जो हवा के उतार-चढ़ाव के साथ सुन्दर ध्वनि निकालता है। अकॉर्डियन की यही खूबी उसे बाकी वाद्ययंत्रों से अलग करती है। इसी तरह अकॉर्डियन किताबों का रूप भी पारंपरिक किताबों से अलग होता है। इसके एक-एक फोल्ड को जब हम खोलते जाते हैं तो पूरा दृश्य उभरता है। इतना ही नहीं, इन किताबों को खड़ा किया जा सकता है, खोलकर टाँगा जा सकता है। हर बच्चा अपनी इच्छा से इसे देख या पढ़ सकता है।

चीन, जापान, थाईलैंड आदि देशों में सदियों से अकॉर्डियन किताबें रेशमी कपड़े और कागज़ से तैयार होती रही हैं। हाल ही में एकलव्य से ऐसी किताबें प्रकाशित हुई हैं। इनमें से छः लोकप्रिय कविताओं पर आधारित हैं और एक शब्द रहित किताब है।

आम के सर पे
कविता : सुशील शुक्ल,
चित्र : लोकेश खोड़के

बज़ार
कविता : प्राशिका समूह
चित्र : प्रशांत सोनी

धम्मक-धम्मक
कविता : प्रयाग शुक्ल
चित्र : नीना भट्ट

लाल पहाड़
शब्द रहित
चित्र : वासवी ओज़ा

क्या बात हो गई?
कविता : प्रभात
चित्र : हीरा धुर्वे)

इन किताबों को आप पिटारा कार्ट से मंगवा सकते हैं।
http://www.pitarakart.in

पतंग

कविता : राजेश जोशी

चित्र : सुविधा मिस्त्री

आओ! आओ!
पतंग बनाओ
आसमान से ले लो
थोड़ा कागज़ नीला
बाँस वनों से
ठट्ठे और कमानी ले लो
आटा थोड़ा माँ दे देगी
नदियों से कुछ पानी ले लो।
बाँस छीलकर मोड़ो उसको
लेई लगाकर जोड़ो सबको।
दाएँ रखकर सूरज चन्दा
बाएँ पर तारे चिपकाओ
आसमान जब खुला-खुला हो
और हवा हो जब मस्ती में
गूँथ-गूँथकर सपनों की इक लम्बी डोरी
दूर गगन में इसे उड़ाओ
लिखकर मन की बातें सारी
तारों को पाती भिजवाओ
आओ आओ पतंग उड़ाओ।

आओ बादल
कविता : श्याम सुशील
चित्र : प्रोईती रॉय

मेरी छुट्टी का दिन

शनिवार के दिन हमने छुट्टी का प्लान बना लिया था। हम सुबह 5 बजे उठकर नहा-धोकर जल्दी से तैयार होकर माण्डू जाने के लिए निकल ही रहे थे कि अचानक से पापा के एक दोस्त का फोन आ गया और हमारा प्लान बिगड़ गया। मुझे इतना गुस्सा आ रहा था कि मैं बिस्तर पर जाकर सो गई। सीधे शाम को उठी। फिर पापा ने कहा कि चलो अपन सब कहीं पर घूमने चलते हैं। तो मैंने कह दिया कि मैं नहीं जाऊँगी। आप सब को जाना है तो जाओ। तो मम्मी-पापा और मेरी बहन ने मुझसे मज़ाक करने का सोचा। उन्होंने मुझसे आखिरी बार पूछा कि मैं उनके साथ चल रही हूँ या नहीं। तो मैंने मना कर दिया। तो फिर मम्मी ने मज़ाक में दरवाज़ा लगा दिया। तो मैं रोने लगी। फिर मम्मी ने पापा को धीरे-से कहा कि अपन चलने का नाटक करते हैं। फिर सबने ऐसा ही किया तो फिर मैं और रोने लगी। तो मम्मी-पापा और नियति ने बोला कि हम मज़ाक कर रहे थे। फिर मैं हँसने लगी। और हम सब बाहर घूमने निकल गए।

–अदिती सोनी, आठवीं, सरदाना इंटरनेशनल स्कूल

चित्र–अमिषा, पाँचवीं, रा. प्रा. विद्यालय गणेशपुर, उत्तराखण्ड

चित्र –वसुन्धरा, तीसरी, रुम टू रीड फलौदी, जोधपुर

बकरी और कौआ

एक बकरी थी। वह खेत में घास खा रही थी। खेत के पास एक पेड़ था। पेड़ पर कौआ बैठा था। बकरी ने कौए से पूछा, “भाई क्या कर रहे हो?” कौआ बोला, “सर्दी आने वाली है इसलिए मैं सोच रहा हूँ कि सर्दी में कहाँ रहूँगा?” बकरी ने कहा, “तुम मेरे साथ मेरे घर चलो। हम दोनों वहाँ रहेंगे।” कौआ बहुत खुश हुआ और शाम को बकरी के साथ चला गया।

–हसना कुंवर, पाँचवीं, रा. प्रा. विद्यालय टाडावाड़ा, सोलंकियान राजसमन्द, राजस्थान

मेरा पन्ना

चित्र –विजय, छटी, केन्द्रीय विद्यालय भुज, गुजरात

बेखबर बचपन

बचपन में था नहीं हमारा कोई काम
दिनभर खेलते मौज मनाते
चींटी का हम रास्ता काटते
बच्चों को हम मार रुलाते
घर आकर फिर डाँट खाते
किसी को रुलाते
किसी का झगड़ा लगाते
तब हमें कुछ समझ ना आता
सिवा खेल के कुछ ना भाता
काश फिर बचपन आ जाता

–दीपक कुमार, नवीं, बलिया, उ. प्र.

चित्र–आर्यन प्रधान, तीसरी, तेजू पुस्तकालय, अरुणाचल प्रदेश

चित्र–काली कुमारी, पाँचवीं, रूम टू रीड सिरोही, राजस्थान

भालू, तितली और फूल

नेहा एक लड़की है छोटी-सी। भालू एक खिलौना है बड़ा-सा। भालू और नेहा दोस्त हैं। नेहा और भालू साथ-साथ रहते हैं। आज शाम नेहा बगीचे में गई। भालू भी साथ गया। वहाँ एक फूल था।। बड़ा-सा फूल। फूल गुलाबी रंग का था। नेहा ने फूल को देखा। उसे फूल सुन्दर लगा।

ऊपर आसमान था। बड़ा-सा आसमान। आसमान का रंग नीला था। नेहा को आसमान सुन्दर लगा। आसमान में तितली थी। छोटी-सी। उसके पंखों का रंग लाल था। नेहा को तितली अच्छी लगी।

नीचे घास थी। घास का रंग हरा था। भालू और नेहा घास पर बैठे। घास नरम थी। नेहा को घास अच्छी लगी। भालू फूलों से बात करने लगा। लो नेहा तो बैठे-बैठे सो गई।

–ज्योति कुमारी, सातवीं, उ. मा. विद्यालय कुरेठा, कटिहार, बिहार

माथापच्ची

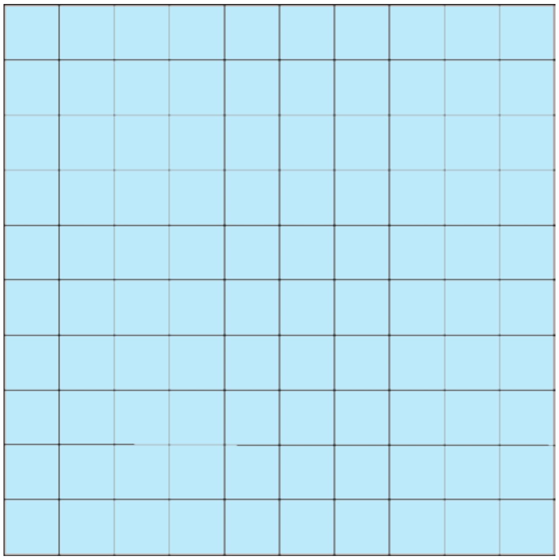

1. क्या 10x10 के इस चौकोर को 1x4 के आयताकार पत्थरों से पूरी तरह ढँका जा सकता है?

2. क्या तुम ऐसे कुछ फूलों के नाम बता सकते हो जो इन दिनों खिलते हों?

3. मायरा कमरे में लगी एक घड़ी की ओर देख रही है जो कि सही समय बता रही है। फिर भी वह नहीं जानती कि सही समय क्या है। ऐसा क्यों?

4. एक हवाईजहाज़ के लिए हवा की दिशा में उड़ान भरना आसान होगा या हवा की विपरीत दिशा में?

5. किसी लकड़ी के टुकड़े में हथौड़ी से कील ठोंकना सम्भव होता है लेकिन हाथ से नहीं। भला क्यों?

6. ऐसी कौन-सी चीज़ है जो पानी पीते ही मर जाती है?

(प्यास\आग)

7. वो क्या है जिसे लोग खाने के लिए खरीदते हैं लेकिन कभी खाते नहीं हैं?

(थाली)

सुडोकू-3 का जवाब

1	2	4	3
3	4	2	1
4	3	1	2
2	1	3	4

सुडोकू

दिए हुए बॉक्स में 1 से 4 तक के अंक भरना। आसान लग रहा न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 4 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराएं न जाएं। साथ ही साथ, इस बड़े डब्बे में आपको चार डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 4 तक के अंक दुबारा न आएं। थोड़ा कठिन लग रहा है? करके तो देखिए, जवाब अगले अंक में आपको मिल जाएगा।

सुडोकू-4

	1		
		4	
	2		

चित्र पहेली
बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे
THE CIRCUS

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20

वसंत
घास के इस फूल से है...

सुशील शुक्ल

कुछ फूल ज़मीन के इतने करीब खिलते हैं कि लगता है मिट्टी को ही फूल आ गए हैं। उनका तना सुई बराबर होता है। जैसे आकाश में ठीक ज़मीन के पास कोई फूल टाँक रहा है। हम आमतौर पर अपने कद की ऊँचाई से ही दुनिया देखते हैं। इन फूलों को देखने के लिए मैं झुकता हूँ। इतने बारीक पौधे इतने सटकर खड़े रहते हैं कि कौन से पौधे पर कौन-सा फूल खिला है ये पता चल नहीं जाता। पता करना पड़ता है। झुककर इन फूलों को देखता हूँ तो जाने कितने जीवों के कद से भी इन फूलों को देख पाता हूँ। मेरे लिए घास के ये फूल ऊपर से दिख रहे फूल हैं। और एक चींटी के लिए, एक छोटे से कीड़े के लिए वे ज़मीन से दिख रहे घास के फूल हैं।

इस दुनिया में ईश्वरों की कितनी ऊँची-ऊँची मूर्तियाँ हैं। मैं कभी इन मूर्तियों के सामने खुद को छोटा नहीं महसूस करता हूँ। पर इस एक छोटे से घास के फूल के सामने मैं खुद को बहुत छोटा महसूस करता हूँ। पृथ्वी जब अकेली अनंत आकाश में घूमती होगी तो उसे कभी-कभी अकेलापन लगता होगा। तब उसके सीने से चिपके एक घास के फूल से ही उसे हिम्मत मिलती होगी।

....ये घास के फूल पृथ्वी की धुरी है। और पृथ्वी अपनी इसी धुरी पर झुकी है। पृथ्वी के हम सभी रहने वालों चींटियों से हाथियों तक, सुनो, जल की मछलियो, ज़मीन में रहने वाले केंचुओं, साँपों, मेंढकों...सुनो....सब बाहर आ जाओ...देखो इस तरफ वसंत आया है।...

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: सुशील शुक्ल